SACHCHA RAHI · ISSN 2582-4007 · VOL 25 · ISSUE 07 · SEPTEMBER 2026

हिन्दी मासिक

सितम्बर 2026

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नैतिकता के शिक्षक और मानवता के मार्ग दर्शक हैं। आप सल्ल 0 का पूर्ण जीवन क्षमा, दया, प्रेम, सद्‌व्यवहार, सहानुभूति, मानव सम्मान का दर्पण है । आप सल्ल 0 की शिक्षा और दीक्षा और सहाब – ए – किराम के साथ आपके व्यवहार का मौलिक सार सहानुभूति ही रहा है, आप सल्ल 0 केवल मुसलमानों के लिए रहमत नहीं बल्कि सारे जग के लिए रहमत थे।

(मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह 0)

एक प्रति ₹40/=

वार्षिक ₹400/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ — 226007
समयः (8:00 am to 1:00 pm)
Whats'app & Call:
Mob. 9559844716
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक) 60 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई—मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

सितम्बर 2026 वर्ष 25 अंक 07

सलाम ले! तेरी उम्मत सलाम करती है

सलाम तुझ पे मदीने के ताजदार सलाम।
सलाम तुझ पे गरीबों के गमगुसार सलाम।।
सलाम ऐ चमन—ए—दहर की बहार सलाम।
हज़ार बार दुरूद और हज़ार बार सलाम।।
सलाम ले, तेरी उम्मत सलाम करती है।
तुझे ख़ुदा की मशीयत सलाम करती है।।
कहे न क्यों चमन—ए—रोज़गार सल्ले अला।
कि तू है रहमत—ए—परवरदिगार सल्ले अला।।
ये दोश और ये शफाअ़त का बार सल्ले अला।
हो तुझ पे उम्मत—ए—बेकस, निसार सल्ले अला।।
बचा ले मौज—ए—हवादिस से जां—निसारों को।
ओढ़ा दे चादर—ए—रहमत गुनाहगारों को।।

(बिस्मिल अ़ज़ीमाबादी)
(1900—1978)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
रसूलुल्लाह सल्ल0 का घर वालों	मौलाना अब्दुर्रशीद राजस्थानी नदवी	07
अंधकार से प्रकाश की ओर	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	13
जब ज़ुल्म व सितम हद से गुज़रे	माहिरुल क़ादरी	14
सीरते नबवी	डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	15
अशर–ए–मुबश्शरा	इदारा	19
अम्बिया (ईशदूतों) का शहर	इं0 जावेद इक़बाल	20
हज़रत मुहम्मद सल्ल0	सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी	25
हुज़ूर सल्ल0 की पाक बीवियाँ	इदारा	28
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	29
मीडिया के क्षेत्र	मौलाना मुनव्वर सुल्तान नदवी	30
आप सल्ल0 के जीवन	मुहम्मद इक़बाल नदवी	34
महिलाओं का सम्मान (पद्य)	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	36
इस्लाम में महिलाओं के हुकूक	नौशाद खान नदवी	37
स्वास्थ्य	डॉ0 शाहीन	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू अब्दुर्रहमान नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-कहफः-

अनुवादः—

और उन सबको आपके पालनहार के सामने पंक्तिबद्ध पेश कर दिया जाएगा (अंततः) तुम हमारे पास आ ही गए जैसे हमने तुमको पहली बार पैदा किया था, लेकिन तुमने यह समझा था कि हम तुम्हारे लिए कोई वादा निर्धारित नहीं करेंगे(48) और परवाना आमाल का (कर्मपत्र) सामने रख दिया जाएगा तो आप अपराधियों को देखेंगे कि उसमें जो कुछ (लेखा—जोखा) है उससे कांप रहे होंगे और कह रहे होंगे कि हाय हमारा दुर्भाग्य! यह कैसी किताब है कि कोई छोटी बड़ी चीज इसने ऐसी नहीं छोड़ी जो गिनी न हो, और वे अपना सब किया धरा मौजूद पाएंगे और आप का पालनहार किसी के साथ अन्याय नहीं करेगा[1](49) और जब हमने फरिश्तों से कहा था कि आदम को सज्दा करो तो उन सबने सज्दा किया सिवाय इब्लीस के वह जिन्नों में से था तो उसने अपने पालनहार का आदेश न माना, क्या फिर भी तुम मुझे छोड़ कर उसको और उसकी संतान को दोस्त बनाते हो? हालांकि वे सब तुम्हारे दुश्मन हैं, अत्याचारियों के लिए कैसा बुरा बदल है[2](50) न हमने आसमानों और धरती को पैदा करते हुए उन्हें हाजिर किया था और न खुद उनको पैदा करते हुए, और हम बहकाने वालों को मददगार नहीं बनाते[3](51) और जिस दिन वह कहेगा कि बुला लो मेरे उन साझियों को जिनको तुमने (साझी) समझा था तो वे आवाजें देंगे बस वे उनको कोई जवाब न दे सकेंगे और हम उनके बीच विनाश का एक गड्ढ़ा आड़ देंगे(52) और अपराधी लोग आग देखेंगे तो समझ लेंगे कि उनको उसी में गिरना है और उससे वापसी का उनको कोई रास्ता न मिलेगा(53) और इस कुरआन में हमने लोगों के लिए हर तरह के उदाहरण फेर फेर कर बयान किये हैं और इन्सान है कि सबसे अधिक झगड़ालू है[4](54) और लोगों के लिए कोई रूकावट है ही नहीं कि वे ईमान ले आएं और अपने पालनहार से माफी मांगें जब कि हिदायत उनके पास आ चुकी सिवाय इसके कि (उनको यह इंतेजार हो कि) पहलों का नियम उन पर भी लागू हो जाए या अजाब उनके सामने ही आ जाए[5](55) और पैगम्बरों को तो हम शुभ समाचार देने वाला और डराने वाला बना कर भेजते हैं और जिन्होंने इन्कार किया वे असत्य को लेकर झगड़ा करते हैं ताकि उसके द्वारा सत्य के कदम डगमगा दें और मेरी निशानियों को और जिससे उनको डराया गया उसको उन्होंने मजाक बना रखा है(56) और उससे बढ़ कर अत्याचारी कौन होगा जिसको उसके पालनहार की आयतों से नसीहत की जाए तो वह उससे मुँह मोड़ ले और अपना किया धरा सब भूल जाए, हमने उसके समझने से उनके दिलों पर परदे डाल दिये हैं और उनके कानों में डाट (दे रखी), है और अगर आप उनको सीधी राह की ओर बुलाएं तब भी वे हरगिज सही रास्ते पर कभी न आएंगे(57) और आपका पालनहार बड़ा माफ करने वाला और बहुत कृपालु है, अगर वह उनकी करतूतों पर उनकी पकड़ कर लेता तो तुरन्त ही उनको अजाब से ग्रस्त कर देता लेकिन उनके लिए एक निर्धारित वादा है, उससे बच कर वे कहीं हरगिज शरण न पा सकेंगे(58) और यह सब बस्तियाँ हैं कि जब उन्होंने अत्याचार किया तो हमने उनको तबाह कर दिया और

हमने उनकी तबाही के लिए एक निर्धारित समय रखा था(59) और (याद कीजिए) जब मूसा ने अपने सेवक से कहा कि मैं बराबर लगा ही रहूँगा यहाँ तक कि दो समुद्रों के संगम पर पहुँच जाऊँ या मुद्दतों चलता ही रहूँ[6](60) फिर जब वे दोनों दो समुद्रों के संगम पर पहुँचे तो वे अपनी मछली भूल गये, बस उसने सुरंग बनाते हुए नदी की राह ली(61) फिर जब वे दोनों आगे बढ़े तो उन्होंने अपने सेवक से कहा कि हमारा खाना तो लाओ अपनी इस यात्रा से तो हम थक गये(62)।

तफ़सीर (व्याख्या):–

1. नाम–ए–आमाल (कर्मपत्र) हर एक को दिया जाएगा, उनमें अपराधी अपनी बुराइयों का विवरण देख कर कांप रहे होंगे और ईमान वाले खुशी में अपना आमाल नामा एक दूसरे को दिखाते फिरेंगे।

2. इब्लीस जिन्नों में से था, इबादत में तरक्की करके फरिश्तों के गिरोह में शामिल हो गया था, इसलिए फरिश्तों को सज्दे का आदेश हुआ तो उसको भी हुआ, उस समय उसकी वास्तविक प्रवृत्ति रंग लाई, घमण्ड करके अल्लाह की फरमांबरदारी (आज्ञाकारिता) से भाग निकला, आदम के आगे सिर झुकाना अपनी शान के विरुद्ध समझा, आश्चर्य है कि आज आदम की संतान अपने पालनहार के स्थान पर उसी अपने अनादिकालिक दुश्मन और उसकी संतान को अपना दोस्त और शुभचिन्तक बनाना चाहती है, इससे बढ़ कर अन्याय और अत्याचार क्या होगा।

3. यानी न दुनिया के पैदा करते समय उनसे परामर्श लिया गया और न ही वे उस समय मौजूद थे और न खुद उनको पैदा करते समय उनसे पूछा गया और न ही वे उस समय मौजूद थे, फिर आख़िर उनको खुदाई में कैसे साझीदार बना लिया गया।

4. यानी पवित्र कुरआन किस तरह विभिन्न शीर्षकों और भाँति–भाँति के प्रमाणों से समझाता है मगर इंसान कुछ ऐसा झगड़ालू है कि साफ और सीधी बातों में भी झूठे तर्क–वितर्क किये बिना नहीं रहता और विभिन्न प्रकार की मांग आरम्भ कर देता है कि फुलाँ चीज दिखाओ तो मानूंगा।

5. सारे प्रमाण पूरे हो चुके, अब उनके पास अपने कुफ्र पर इसके सिवा कोई प्रमाण नहीं रह गया कि वे पैगम्बर से यह मांग करने लगे कि अगर हम असत्य पर हैं तो जिस तरह असत्य वादियों पर पहले अजाब आ चुका उसी तरह अजाब ले आओ, आगे अल्लाह तआला कहता है कि पैगम्बर का काम अजाब लाना नहीं है, उसका समय अल्लाह की ओर से निर्धारित है, पैगम्बर का काम मानने वालों को शुभसमाचार देना और इन्कार करने वालों को सावधान करना है, फिर हठधर्मों की हालत बयान की जा रही है कि वे अल्लाह की आयतों का मजाक उड़ाते हैं, वे किसी तरह भी ईमान नहीं लाएंगे मगर अल्लाह तुरन्त पकड़ नहीं करता, उनके लिए अजाब का जो समय निर्धारित है, उस समय वे उसका शिकार होंगे, फिर उनको डराने के लिए उदाहरण दिया जा रहा है कि उनके निकट ही कितनी बस्तियाँ हैं कि जब उन्होंने न माना तो उनको तबाह कर दिया गया, विशेष रूप से आद व समूद की बस्तियाँ जो शाम व यमन के रास्ते पर पड़ती थीं।

6. ऊपर उल्लेख हुआ था कि अहंकारी काफिर गरीब मुसलमानों के साथ बैठना अपनी शान के विरुद्ध समझते थे, इसी पर दो लोगों की कहावत सुनाई, फिर दुनिया का उदाहरण और इब्लीस का घमण्ड से तबाह होने का बयान हुआ, अब हजरत मूसा और ख़िज्र की कहानी को बयान किया जा रहा है कि अल्लाह वाले अगर सबसे अफजल (श्रेष्ठ) भी हों तो कहते नहीं और कभी गलती से कह जाएं तो चेताया जाता है, कहानी आगे आ रही है।।

❖❖❖

रसूलुल्लाह सल्ल0 का घर वालों के साथ बर्ताव

मौलाना अब्दुर्रशीद राजस्थानी नदवी

घर के अंदर इंसान का असली अखलाक सामने आता है। बाहर लोगों के साथ अच्छा बर्ताव करना आसान होता है, लेकिन जो शख्स अपने घर वालों के साथ भी नरमी, मुहब्बत और खुश–अखलाकी का मुजाहरा करे, वही असल मायने में अच्छे अखलाक वाला है। इसी लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की घरेलू जिंदगी हर मुसलमान के लिए बेहतरीन नमूना है।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर वालों के साथ कैसे रहते थे, उन्होंने फरमायाः ''आप सबसे अच्छे अख़लाक़ वाले थे। न आप बदज़बान थे, न गाली गलोज और बेशर्मी की बातें करने वाले, न बाज़ारों में शोर मचाने वाले थे और न बुराई का बदला बुराई से देते थे, बल्कि माफ कर देते और दरगुज़र फरमाते थे।'' (जामे तिर्मिजी, हदीसः 2016) यह गवाही उस मुबारक हस्ती की है जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सबसे ज़्यादा करीब से देखा। इंसान अपने दोस्तों और मिलने वालों के सामने बहुत अच्छा बन सकता है, लेकिन घर के अंदर उसका असल मिज़ाज सामने आता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिंदगी शुरू से आखिर तक एक जैसी रही। घर के अंदर भी वही अख़लाक, वही नरमी और वही रहमत थी जो बाहर लोगों के साथ नज़र आती थी। अल्लाह तआला ने फरमायाः ''और बेशक आप बुलंद अख़लाक़ पर फाइज हैं।''

(सूरह अल–कलमः 4)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''तुम में सबसे बेहतर वह है जो अपने घर वालों के लिए सबसे बेहतर हो, और मैं अपने घर वालों के लिए तुम सब से ज़्यादा बेहतर हूँ।'' (जामे तिर्मिजी, हदीसः 3895) आज बहुत से लोग बाहर के लोगों से बड़े अखलाक़ से मिलते हैं, लेकिन घर पहुँचते ही उनका लहजा बदल जाता है। बीवी, बच्चों और घर वालों के साथ सख़्ती और तल्खी से पेश आते हैं, जबकि इस्लाम ने अच्छाई का असल पैमाना यही बताया है कि इंसान अपने घर वालों के साथ कैसा है। हज़रत अनस रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैंः ''मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा अपने घर वालों पर रहम करने वाला किसी को नहीं देखा।''

(सहीह मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बच्चों से बहुत मुहब्बत फरमाते थे। अपने साहबजादे इबराहीम रज़ियल्लाहु अन्हु को गोद में उठाते, प्यार करते और बोसा देते थे। एक मौके पर आपने फरमायाः ''जो रहम नहीं करता, उस पर रहम नहीं किया जाता।'' (सहीह बुखारीः 5997, सहीह मुस्लिमः 2318) यह हदीस बताती है कि बच्चों से मुहब्बत करना, उन पर शफकत करना और उन्हें अपना वक्त देना नबवी अख़लाक़ का अहम हिस्सा है।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर के अंदर क्या किया करते थे। उन्होंने फरमायाः ''आप अपने घर वालों के काम में हाथ बँटाते थे, फिर जब नमाज का वक्त हो जाता तो नमाज़ के लिए तशरीफ ले जाते थे।'' (सहीह बुखारी, हदीसः 676) यह हदीस बताती है कि घर के काम करना या घर वालों की मदद करना किसी शख़्स की शान के ख़िलाफ़ नहीं, बल्कि सुन्नत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरी उम्मत के रहबर और अल्लाह के आखिरी रसूल होने के बावजूद अपने घर वालों की मदद फरमाते थे। इससे मालूम होता

है कि जो शख्स अपने घर वालों का बोझ हल्का करता है, वह दरअसल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल करता है।

हजरत आयशा रजियल्लाहु अन्हा ने यह भी फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न ''फाहिश'' थे और न ''मुतफह्हिश'' यानी न आपकी ज़बान से गंदी बात निकलती थी और न आप जान–बूझकर किसी को बुरा–भला कहते थे। (जामे तिर्मिजी, हदीसः 2016) आज हमारे घरों में पैदा होने वाले बहुत से झगड़ों की बुनियाद जबान होती है। कभी गुस्से में निकला हुआ एक जुमला बरसों की मुहब्बत खत्म कर देता है। ताना देना, जलील करना और गाली–गलौज करना किसी मोमिन की पहचान नहीं है। अल्लाह तआला फरमाता हैः ''और मेरे बंदों से कह दीजिए कि वे वही बात कहें जो सबसे अच्छी हो।'' (सूरह बनी इस्राईलः 53) एक दूसरी जगह इरशाद फरमायाः ''लोगों से अच्छी बात कहा करो।''

(सूरह अल–बकरहः)

अगर घर का हर फर्द इन हदीसों और आयतों पर अमल कर ले तो बहुत से झगड़े पैदा होने से पहले ही खत्म हो जाएँ। अच्छी बात दिलों को जोड़ती है और बुरी बात रिश्तों को तोड़ देती है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊँची आवाज, शोर–शराबे और बेवजह हंगामे से दूर रहते थे। आपकी जिंदगी वकार, हया और इत्मीनान का नमूना थी। इसी लिए कुरआन मजीद में हजरत लुकमान अलैहिस्सलाम की यह नसीहत नक़्ल की गई हैः ''अपनी चाल में मियानारवी (संयमता) इख्तियार करो और अपनी आवाज पस्त रखो।'' (सूरह लुकमानः 19) घर के अंदर इंसान की आवाज, उसका लहजा और उसका अंदाज उसके अखलाक का आईना होता है। जो शख्स अपने गुस्से पर काबू रखता है और नरमी से बात करता है, वह अपने घर में सुकून और मुहब्बत का माहौल पैदा करता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि आप बुराई का जवाब बुराई से नहीं देते थे। अगर कोई तकलीफ पहुँचाता या सख्त बात कहता, तब भी आप माफी और दरगुजर का रास्ता इख्तियार फरमाते थे। अल्लाह तआला फरमाता हैः ''अच्छाई और बुराई दोनों बराबर नहीं हो सकती। बुराई को उस तरीके से दूर करो जो सबसे अच्छा हो, फिर वह शख़्स जिसके और तुम्हारे दरमियान दुश्मनी थी, ऐसा हो जाएगा जैसे वह गहरा दोस्त हो।'' (सूरह हामीम सजदः 34)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''ताकतवर वह नहीं जो कुश्ती में दूसरे को पछाड़ दे, बल्कि असल ताकतवर वह है जो गुस्से के वक़्त अपने आप पर काबू रखे।'' (सहीह बुखारीः 6114, सहीह मुस्लिमः 2609) आपकी पूरी जिंदगी इन्हीं तालीमात की तफ़सीर है। आज हमारे घरों, खानदानों और समाज को सबसे ज़्यादा इसी नबवी अखलाक की ज़रूरत है। अगर शौहर अपनी बीवी के साथ, बीवी अपने शौहर के साथ, माँ–बाप अपनी औलाद के साथ और औलाद अपने माँ–बाप के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बताए हुए अखलाक को अपना लें, तो बहुत से झगड़े अपने आप खत्म हो जाएँ। घर सुकून का गहवारा बन जाएगा, बच्चों की तरबियत बेहतर होगी और मुहब्बत, रहमत और इत्मीनान का माहौल पैदा होगा। हर मुसलमान को चाहिए कि वह रोज अपना मुहासबा करे कि हमारे अखलाक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत का कितना हिस्सा मौजूद है। सच्ची मुहब्बत का तकाजा यही है कि हम सिर्फ आपकी मुहब्बत का दावा न करें, बल्कि आपके अखलाक़ आपकी नरमी, आपकी रहमत और आपकी माफी को अपने घरों में ज़िंदा करें। अल्लाह तआला हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाकीजा अख़लाक़ पर चलने और उन्हें अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाने की तौफीक अता फरमाए। आमीन।

❖❖❖

अंधकार से प्रकाश की ओर

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

ये धरती अल्लाह की नेमतों एवं सुख सामग्री से माला–माल है। इंसान हर जगह और हर समय उन नेमतों से फ़ाइदा और लाभ उठाता है, धरती से आकाश तक अल्लाह ने एक जीवन व्यवस्था स्थापित की जिसके परिणाम स्वरूप हवाएं चलती हैं बादल उठते हैं, वर्षा होती है, धरती से अन्न पैदा होता है, पेड़ों से फल फूल सबज़ियाँ निकलती हैं, सूर्य चन्द्रमा भी इंसान की सेवा में लगे हुए हैं, ये सब नेमतें अल्लाह ने इंसान के लिए बनाईं और इंसान को अपनी इबादत और उपासना के लिए बनाया, अल्लाह ने बहुत स्पष्ट शब्दों में अपनी किताब कुरआन में उल्लेख कियाः–

''और मैंने इंसान और जिन्नातों को तो मात्र इसी लिए पैदा किया कि वे मेरी इबादत करें, मैं उनसे रोजी नहीं चाहता और न ये चाहता हूं कि वे मुझे खिलाएं'' (सूरः ज़ारियात आयत नं0 56,57)। इसलिए अनिवार्य है कि हर हाल में इन्सान अल्लाह के आदेशों का पालन करे और अल्लाह का आज्ञाकारी बन्दा बन कर जीवन व्यतीत करे और उसके आदेशों की अवहेलना न करे। इन्सान कभी कभी अपने मन या अपने पुराने शत्रु शैतान के बहकावे में आ जाता है जिसकी वजह से वह अपने स्वामी और अपने पालनहार अल्लाह के आदेशों की उपेक्षा करता है और विनाश के गढ़े में चला जाता है, साधारण तौर पर इन्सान माल और संतान की लोलुप्ता में अल्लाह के आदेशों को छोड़ देता है या भूल जाता है अल्लाह की किताब कुरआन हमें सावधान कर रहा है ''ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान कहीं तुमको अल्लाह की याद और नमाज़ से ग़ाफिल न करदें और जिसने ऐसा किया तो ऐसे लोग ही घाटा उठाने वाले हैं, और हमने तुम्हें जो रोज़ी दी है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुममें से किसी के पास मौत आ पहुंचे तो फिर वह कहने लगे कि ऐ मेरे पालनहार! तूने थोड़े समय के लिए मुझे मोहलत क्यों न दे दी तो मैं खूब ख़ैरात करता और भले लोगों में शामिल हो जाता''।

(सूरः मुनाफ़िकून आयतः 9,10)

जब जब मानव समाज में बिगाड़ और भ्रष्टाचार आया अल्लाह ने अपने नबियों और रसूलों को सुधार के लिए भेजा और अल्लाह के प्रकोप और पकड़ से इंसानों को डराया ''कोई क़ौम ऐसी नहीं जिनमें डराने वाला न आया हो''।

(सूरः फ़ातिर–24)

मानव इतिहास में कोई युग ऐसा नहीं गुज़रा जिसमें नबी के रूप में कोई पथ प्रदर्शक न आया हो, नबियों की संख्या एक लाख चौबीस हज़ार बताई जाती है। प्रथम नबी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, नबियों का निर्वाचन अल्लाह की ओर से होता है, नबूवत स्वर्जित नहीं बल्कि अल्लाह की ओर से प्रदत्त होती है।

अल्लाह के नबी मानव इतिहास के उत्तम और अनुपम आदर्श हैं उनके जीवन का हर युग बे ऐब और बेदाग़ होता है उनके चरित्र पर कोई उंगली नहीं उठा सकता, अल्लाह तआला ने उनके नामों के साथ उनकी नैतिक विशेषताओं का उल्लेख किया है उदाहरण के रूप में कुरआन शरीफ़ की कुछ आयतें प्रस्तुत की जा रही हैं, समस्त नबियों पर अल्लाह की रहमतें नाज़िल हों, नबियों की लंबी श्रृंखला है हज़रत इब्राहीम

अलैहिस्सलाम का उल्लेख कुरआन ने बार बार किया है इसलिए उनसे संबंधित आयतों को प्राथमिकता दी जा रही हैः– ''बेशक इब्राहीम ऐसे पेशवा थे जिन्होंने हर ओर से एकाग्र हो कर अल्लाह की आज्ञापालन को अपना लिया था और वे शिर्क (अनेकेश्वरवाद) करने वालों में न थे, उसकी नेमतों के शुक्र अदा करने वाले थे, अल्लाह ने उनको चुना और उनको सीधी राह पर चलाया और हमने उनको दुनिया में भी भलाई दी और आख़िरत में तो निश्चित रूप से वे अच्छे लोगों में हैं फिर हमने आप सल्ल0 को आदेश भेजा कि इब्राहीम की मिल्लत (तरीक़े) पर चलिए जो एकाग्र थे और मुश्रिकों में न थे''। (सूरः नहल, आयत नं0 120–123)। इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की प्रशंसा ऊँचे शब्दों में कई जगह कुरआन शरीफ़ में की है उसका अनुवाद पढ़ये और उनकी बड़ाई का अनुभव कीजिए। ''और पहले हमने इब्राहीम को उनके लायक़ सूझ–बूझ प्रदान की थी और हम उनसे खूब अवगत थे''।

(सूरः अम्बियाः 51)

''और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना चहीता बनाया है''।

(सूरः निसाः 125)

और बाद में आने वालों में हमने उसको बाक़ी रखा, सलाम हो इब्राहीम पर, अच्छे काम करने वालों को हम ऐसे ही बदला देते हैं, निश्चित रूप से वे हमारे ईमान वाले बन्दों में थे'' (सूरः साफ़्फ़ात–108–111) सूरः हूद में अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बड़ी प्रियता के साथ प्रशंसा की ''बेशक इब्राहीम तो बड़े सहनशील, बड़े कोमल ह्रदय वाले बड़े अल्लाह की ओर झुकने वाले थे''। इसी प्रकार उनके बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का उल्लेख है ''वह अपने पालनहार के पसंदीदा थे''।

(सूरः मरियम–55)

इसी प्रकार अल्लाह ने अपने हर नबी का उल्लेख बड़ी महानता और प्रेम के साथ किया है। कुरआन शरीफ़ की तिलावत और अध्ययन से मालूम होता है कि इंसानों में ईमान और अमल के संबंध से जब भी बिगाड़ आया तो अल्लाह ने अपना नबी अवश्य भेजा, ताकि पथ भ्रष्ट इन्सान जो सीधे रास्ते से भटक गया है वह अपने स्वामी और पालनहार के बताए हुए सीधे रास्ते पर आ जाए।

नुबुव्वत का सिलसिला जो प्रथम नबी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से आरम्भ हुआ था वह अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर समाप्त हो गया, नबी करीम सल्ल0 से पहले जो नबी आए वह अपने युग और अपनी क़ौम के लिए विशेष थे परन्तु जब अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को नुबुव्वत के उच्च स्थान पर नियुक्त किया तो फ़रमायाः ''और हमने आपको सारे संसारों के लिए रहमत बना कर भेजा है'' (सूरः अम्बिया–107) जब आप सल्ल0 की आमद हुई तो पूरी दुनिया विनाश के रास्ते पर पड़ गई थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी मुक्ति का प्रबंध किया और इन्सानों को इन्सानियत का पाठ पढ़ाया, कमज़ोरों और पीड़ितों की सहायता करना सिखाया, महिलाओं को उनका स्थान बताया, दोस्त और दुश्मन सब आपकी करुणा सागर से लाभांवित हुए यहां तक कि पशु पक्षी भी इससे वंचित न रहे और आपके द्वारा दिए गये आदेशों का सबको लाभ पहुंचा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मध्य काल 600 साल में अल्लाह का कोई नबी दुनिया में नहीं आया जिसकी वजह से पूरी मानवता अज्ञानता के घटा टोप अंधेरे में डूब गई थी, हर ओर मानवता

का पतन ही पतन था, सारे संसार में ज़ुल्म और अन्याय का घोर अंधकार छाया हुआ था, उस समय अरब देश की भी हालत अत्यन्त ख़राब थी। लोग एक ईश्वर को छोड़ कर अनेक मनगढ़न्त देवी देवताओं की पूजा करते और उनसे डरते थे। उनके आस्तानों पर भेंट चढ़ाते तथा उन्हीं से सहायता मांगते थे। लूट मार, मध्यपान, जुवा तथा लड़कियों का धरती में जीवित गाड़ने का सामान्य प्रचलन था समाज के प्रमुख लोग अनाथों और विधवाओं का माल हड़प जाते थे। गुलामों के साथ पशुओं का सा व्यवहार करते थे। कोई बुराई ऐसी न थी, जो उनमें न पाई जाती हो। अल्लाह तआला को उन पर दया आई उसने अपने बन्दों को सीधा मार्ग दिखाने के लिए हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को रसूल बना कर भेजा। आप सल्ल0 ने दुनिया वालों को अल्लाह का सीधा और सत्य मार्ग दिखाया।

प्यारे नबी सल्ल0 अरब के प्रसिद्ध नगर मक्का मुअज़्ज़मा में 20 अप्रैल 571 ई0 को सोमवार के दिन पैदा हुए। आपके पिता हज़रत अब्दुल्लाह की मृत्यु आपके जन्म से पहले ही हो गई थी, जब आप 6 वर्ष के हुए तो आपकी माता हज़रत आमिना का भी देहान्त हो गया। इसके बाद आपका पालन पोषण आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने किया, परन्तु अभी आप 8 वर्ष ही के थे कि आपके दादा भी चल बसे, अब आपके चचा अबू तालिब आपके अभिभावक बने, उन्होंने पूरी ज़िम्मेदारी और अत्यन्त लाड प्यार के साथ आप सल्ल0 का लालन पालन किया।

पच्चीस वर्ष की अवस्था में मक्का की एक प्रतिष्ठित विधवा महिला हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के साथ प्यारे रसूल का निकाह हुआ हज़रत ख़दीजा अत्यन्त धनवान और दानशील महिला थीं, स्त्रियों में सबसे पहले वही ईमान लाईं, उन्होंने हर सुख दुख में प्यारे नबी सल्ल0 का साथ दिया जब आप सल्ल0 दुष्टों की बातों से दुखी होते तो वह आपको ढारस बंधाती। आप सल्ल0 ने सदा सत्य का पालन किया, जीवन में कभी भी आप झूठ नहीं बोले, इस बात को आपके शत्रुओं ने भी स्वीकार किया है। इसी कारण सब आपको ''सादिक़'' अर्थात सत्यवादी कहते थे। लोग आपके पास अपना सामान धरोहर के रूप में रखा करते थे, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि उनका माल नष्ट नहीं होगा और वह उन्हें समय पर सुरक्षित मिल जाएगा। आप उनकी धरोहर ज्यों की त्यों लौटा देते। इसलिए लोग आपको ''अमीन'' कह कर पुकारा करते थे।

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अवस्था जब चालीस वर्ष की हुई तो अल्लाह ने आपको ''नबी'' बनाया और आप पर कुरआन उतारा। आपने लोगों तक अल्लाह का सन्देश पहुंचाया, आपने लोगों को संबोधित करते हुए कहा ऐ लोगो! अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है, तुम केवल उसी की बन्दगी करो किसी को उसका साझी न बनाओ। मैं अल्लाह का रसूल हूँ। मेरे आदेशों का पालन करो और जिस काम से रोकूँ उससे रुक जाओ और जो मैं करूँ उसे अपनाओ। क़यामत के दिन तुम्हें पुनः जीवित किया जाएगा और तुम लोग अपने रब के सामने उपस्थित किए जाओगे, तुममें से प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का हिसाब देना होगा। उस दिन से डरो। अल्लाह के बन्दों के साथ अच्छा व्यवहार करो उनके हक़ और अधिकार का आदर करो, तुम जहन्नम की आग से बच जाओगे और जन्नत के अधिकारी होगे।

नुबुव्वत का मुबारक सिलसिला जो सय्यिदना आदम अलैहिस्सलाम से आरंभ हुआ था वह नबी करीम हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर समाप्त हुआ, स्वयं नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया ''मेरे बाद कोई नबी नहीं'' आप सल्ल0 द्वारा जो दीन व शरीअ़त आई वह हर

प्रकार से सदैव के लिए परिपूर्ण है, उसमें कोई संशोधन और निराकरण नहीं होगा, इसकी पुष्टि कुरआन की सूरः माइदा आयत नं0 03 से होती है, अल्लाह तआला फ़रमाता है– ''आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी करदी और दीन (धर्म) के रूप में तुम्हारे लिए इस्लाम को पसन्द कर लिया'' दीन (धर्म) मुकम्मल हो चुका उसमें संशोधन की संभावना नहीं, अल्लाह की नेमत पूरी हो चुकी अब किसी दूसरी ओर देखने की आवश्यकता नहीं और क़यामत तक के लिए इस्लाम को संपूर्ण मानव जाति के लिए पसन्द कर लिया गया, अब सफलता इसी पर निर्भर है।

हज्जतुल विदा (विदाई हज):–

जब अल्लाह का दीन हर ख़ास व आम को पहुँच गया, उम्मत के लोग बुत पूजने की बुराईयों और जाहिलियत की आदतों से पाक और ईमान की दौलत से माला माल हो गये तो अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने हिजरत के दसवें साल हज के लिए मदीना मुनव्वरा से निकले, सारे सहाबा रज़ि0 आपके साथ थे, रास्ते में और लोग भी आ आ के मिलते जाते थे, मक्का मुअज़्ज़मा तक पहुंचते पहुंचते ये हाल था कि जिधर नज़र उठती थी मुसलमान ही मुसलमान नज़र आते थे। आप नवें दिन मक्का पहुंचे, छोटे–छोटे बच्चों ने जब सुना कि रसूलुल्लाह सल्ल0 तशरीफ़ लाए हैं तो दौड़ पड़े आप ने उन्हें अपने ऊँट पर बिठा लिया, काबा पर नज़र पड़ी तो आप ऊँट से उतर पड़े काबा का तवाफ़ किया तवाफ़ के समय आप तलबिया के शब्द कहते जाते थे। अनुवादः प्रस्तुत है– ''ऐ अल्लाह हम तेरे सामने हाज़िर हैं, तेरा कोई साझी नहीं, सब तारीफें तेरे लिए हैं, मुल्क तेरा है नेमतें तेरी हैं, तेरा कोई साझी नहीं'' तवाफ़ करके नमाज़ पढ़ी और कहा ''अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं वह अकेला है, उसका कोई शरीक़ नहीं, मुल्क उसी का है सब प्रशंसायें उसी के लिए हैं, वह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है उसके अलावा कोई इबादत के योग्य नहीं, उसने अपना वादा पूरा किया, अपने बन्दे की मदद की और सब जत्थों को तोड़ दिया। जुमे के दिन ज़िलहिज्जा की नवीं तारीख़ को सब मुसलमान अरफ़ात के मैदान में जमा हुए कोई सवा लाख का हुजूम था, अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने ऊँटनी पर सवार हो कर अन्तिम खुतबा दिया जो बहुत ही महत्वपूर्ण और मौलिक बातों पर आधारित था, उस ख़ुत्बे (संबोधन) में आप सल्ल0 ने पूरी उम्मते मुस्लिमा और पूरी मानव जाति को संबोधित किया।

आप सल्ल0 ने उस समय अरफ़ात में मौजूद सवा लाख जन समूह से फरमाया अल्लाह तुम से मेरे बारे में पूछेगा तो तुम क्या जवाब दोगे? लोगों ने कहा! हम ये कहेंगे कि आपने अल्लाह का पैग़ाम हम तक पहुंचा दिया, आप सल्ल0 ने तीन बार फ़रमाया ''ऐ अल्लाह गवाह रहना, ऐ अल्लाह गवाह रहना, ऐ अल्लाह गवाह रहना।

फिर आपने फ़रमायाः जो लोग हाज़िर हैं वह ग़ैर हाज़िर लोगों को मेरी बात पहुंचा दें।

ये रसूलुल्लाह सल्ल0 का आख़िरी हज था इसलिए उसे हज्जतुल वदा कहते हैं, आपने उस अवसर पर जो बातें कहीं उनसे मालूम होता है कि आपके ज़िम्मे जो काम था आप उसे पूरा कर चुके और थोड़े दिनों में दुनिया से रुख़सत हो जाएंगे।

कि है ज़ात वाहिद,
इबादत के लाएक़
ज़बान और दिल की,
शहादत के लाएक़।
लगाओ तो लौ,
उससे अपनी लगाओ।
झुकाओ तो सर,
उसके आगे झुकाओ

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

ब्याजः-

इस दौर में जो बीमारियाँ महामारी की तरह मुसलमानों में दाखिल होती जा रही हैं, उन में एक घातक बीमारी ब्याज है, विभिन्न इलाक़ों में अगर घूम फिर कर देखा जाए तो एक बड़ी तादाद उन मुसलमानों की है जो खुल्लम–खुल्ला सूदी कारोबार में लिप्त हैं, उनकी गफलत का हाल ये है कि बार बार तकरीर व नसीहत के बावजूद उनको सूदी कारोबार की विनाशकारी होने का सही अंदाजा नहीं होता, और कुछ ऐसे ढ़ीठ भी हैं जो हर तरह की सीमा और नियम क़ानून से अपना दामन छुड़ा लेते हैं, नाम चाहे उनका मुसलमानों जैसा होता है, लेकिन ये "आधुनिकता" के ऐसे आशिक हैं कि वो इस्लाम ही की शक़्ल खराब कर देने के पीछे पड़े हुए हैं, कुछ वो भी हैं जो ब्याज जैसी "लानत" (अभिशाप) के बारे में भी तवस्सो (उदारता) को जायज समझते हैं, जब कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसके बारे में जितने सख़्त अलफाज़ फरमाए हैं और इससे जुड़ी सभी चीज़ों को जिस तरह ना जायज़ फरमाया और उसके हर तरह के दरवाज़ों को बंद कर दिया है, शायद ही ये सख़्ती किसी दूसरे मसले में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनाई हो, ब्याज की एक खास किस्म "रिबल फज्ल" कहलाती है, उसके हराम होने के एलान के वक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया थाः

अनुवादः— "मैं इसकी मनाही इसलिए कर रहा हूँ कि मुझे तुम पर इसमें ब्याज की आशंका है"। (कन्जुलउम्मालः 231/2)

इस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस कारोबारी लेन देन पर पाबंदी लगा दी जिसमें किसी तरह के ब्याज का शुबहा भी होता है, दुनिया में बुनियादी तौर पर दो प्रकार की अर्थव्यवस्थाएं जारी हैं, एक सहकारी (*Socialism*) दूसरे पूंजीवादी (*Capitalism*) की व्यवस्था, दुनिया सहकारी व्यवस्थाओं की बेड़ियों में जकड़ी हुई है, इसमें लोग पूरी तरह सरकार के अधीन हैं, समस्या वरीयताओं के यकीन का हो, या संसाधनों के विभाजन का, आय के विभाजन की समस्या हो या विकास की समस्या का, अर्थव्यवस्था की इन चारों बुनियादी मसलों में सरकार पूरी तरह अधिकार रखती है, इन में जनता का और काम करने वालों का कोई अधिकार नहीं, कोई कैसी ही मेहनत करे लेकिन उसको उतना ही मिलेगा जो सरकार ने उसके लिए तय कर दिया है, ये बिल्कुल ही अप्राकृतिक व्यवस्था थी, इसलिए ये लगभग ना काम हो चुका, इसके बिल्कुल विपरीत पूंजीवादी व्यवस्था है, इसमें आदमी पूरी तरह अधिकार रखता है, वो जिस तरह चाहे कारोबार करे और जैसे चाहे कमाए, अर्थव्यवस्था के चारों रूपों में जो चाहे करे, उस पर किसी क़िस्म की कोई पाबंदी नहीं, ये दोनों व्यवस्थाएं कमी ज़्यादती के शिकार हैं।

इस्लामी अर्थव्यवस्था ने बीच की राह पेश की है, उसमें बेशक एक तरफ आज़ादी दी है, और सरकार की तरफ से कोई पाबन्दी नहीं, लेकिन सीमाएं और हदें भी हैं, हर वो कारोबार जिस से सामूहिक रूप से या व्यक्तिगत रूप से नुकसान पहुँचाया जा रहा हो, उसको इस्लामिक शरीयत में ना जायज़ कहा गया है, इसकी दसियों मिसालें कुरआन व हदीस में मौजूद हैं, उन में ब्याज का मसला सर्वोपरी है।

❖❖❖

जब ज़ुल्म व सितम हद से गुज़रे तशरीफ मुहम्मद ले आए

माहिरुल क़ादरी
1906–1978

कुछ कुफ्र ने फितने फैलाए, कुछ ज़ुल्म ने शोले भड़काए।
सीनों में अदावत जाग उठी, इंसान से इंसा टकराए।।
पामाल किया बर्बाद किया कमज़ोर को ताक़त वालों ने।
जब ज़ुल्म व सितम हद से गुज़रे तशरीफ मुहम्मद ले आए।।
रहमत की घटाएं लहराईं, दुनिया की उम्मीदें बर आईं।
इकराम व अता की बारिश की, अख़लाक़ के मोती बरसाए।।
तहज़ीब की शमऐं रोशन कीं, ऊंटों के चराने वालों ने।
कांटों को गुलों की क़िसमत दी, ज़र्रों के मुकद्दर चमकाए।।
अल्लाह से रिश्ते को जोड़ा, बातिल के तिलिस्मों को तोड़ा।
खुद वक्त के धारे को मोड़ा, तूफ़ाँ में सफीने तैराए।।
तलवार भी दी, कुरआं भी दिया, दुनिया भी अता की उक़्बा भी।
मरने को शहादत फरमाया जीने के तरीक़े समझाए।।
मक्के की जमीं और अर्श कहां, दम भर में यहां पल भर में वहां।
पत्थर को अता गोयाई की और चांद के टुकड़े फरमाए।।
मज़लूमों की फरियाद सुनी, मजबूरों की गम ख़्वारी की।
ज़ख़्मों पे खुनुक मरहम रखे़ बेचैन दिलों के काम आए।।
औरत को हया की चादर दी,ग़ैरत का ग़ाज़ा भी बख्शा।
शीशों में नज़ाकत पैदा की, किरदार के जौहर चमकाए।।
तौहीद का धारा रुक न सका, इस्लाम का परचम झुक न सका।
कुफ्फार बहुत कुछ झुंझलाए, शैतां ने हज़ारों बल खाए।।
ऐ नामे मुहम्मद सल्ले अला माहिर के लिए तू सब कुछ है।
होंठों पे तबस्सुम भी आया, आंखों में भी आंसू भर आए।।

सीरते नबवी, मक्का से मदीना तक

डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

मानवता के मार्गदर्शक, जगनायक और अनुपम आदर्श हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्म अरबी महीने, माह–ए–रबीउल अव्वल की 12 तारीख़ को सोमवार के दिन हुआ। जो हज़रत ईसा अलैहिस्सल्लाम की पैदाइश से पाँच सौ इकहत्तर साल बाद का अरसा है। आपकी माँ का नाम आमिना था। पिता का नाम अब्दुल्लाह था जो कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैदा होने के कुछ दिनों पहले संसार से जा चुके थे। चूँकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनाथ पैदा हुए थे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लालन–पालन 8 वर्ष तक उनके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने किया।

जिस दौर में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए उस दौर का चलन था कि शरीफ़ घरानों के बच्चे देहातों में परवरिश पाते थे। देहाती औरतें शहर में आतीं और शरीफ़ घरानों के बच्चों को अपने साथ ले जातीं। उन्हीं में से हलीमा सादिया थीं जो हवाज़िन कबीले और साद घराने की थीं। वह मक्का आईं और आपकी परवरिश के लिए अपने साथ ले गई। छः साल तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत हलीमा के यहाँ पलते रहे। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छः साल के हो गए तो वह अपनी माँ बीबी आमिना के पास लौट आए लेकिन अल्लाह का करना कि किसी काम के सबब बीवी आमिना मदीने आई, रिश्तेदारी में एक महीने रहीं। जब वह वापस, बेटे और उम्मे ऐमन नामक दासी के साथ मक्का लौटने लगीं तो रास्ते में अबवा नामक स्थान पर उनकी मृत्यु हो गई।

कितना हृदयविदारक दृश्य रहा होगा, जब छः साल का बच्चा अपनी माँ को मरते हुए देख रहा होगा। न कोई यार, न कोई मददगार, न कोई आँसू पोछने वाला लेकिन तकदीर के फैसले को कौन टाल सकता है। खैर! अपनी माँ को वहीं दफना कर वफादार दासी उम्मे ऐमन के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर मक्का लौट आए।

मक्का लौटने पर दादा अब्दुल मुत्तलिब ने अपने अनाथ पोते को सीने से लगाया और पहले से ज़्यादा उनकी परवरिश पर ध्यान देने लगे लेकिन अल्लाह की कुदरत कि वह भी पोते को अधिक समय न दे पाये और प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र के आठवें साल वह भी इस नश्वर संसार से कूच कर गए।

अब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परवरिश की ज़िम्मेदारी अब्दुल मुत्तलिब के बेटे और आप सल्ल० के चचा अबूतालिब के कन्धों पर आ गई। चचा ने अपने भतीजे को बड़े लाड़–प्यार से पाला। अपने बच्चों से बढ़ कर उनके हर आराम की फिक्र की।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आयु 12 वर्ष की हुई तो अरब सभ्यता के अनुसार बकरी चराने लगे। अरब में उस समय पढ़ने– लिखने का चलन न था इसलिए आप भी पढ़–लिख न पाये। अलबत्ता अपने चचा के साथ मिलकर घरेलू और कारोबारी कार्यों का अनुभव प्राप्त करते रहे। इस प्रकार शनैः शनैः आप जवानी की दहलीज पर पहुँचे।

अब आप को रोजी—रोटी और अपने पैरों पर खड़े होने की चिन्ता हुई। कुरैश के जिस कबीले से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सम्बन्ध रखते थे, उसमें सबसे सम्मानजनक पेशा सौदागरी और व्यापार था। अतः आपने इसी पेशे को चुना। कुरैश के सौदागर अक्सर शाम (सीरिया) और यमन की यात्रा करके कारोबारी माल बेचा करते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी कारोबार का सामान लेकर उन्हीं देशों की यात्रा की। आप व्यापार में इतनी ईमानदारी से काम करते कि इसकी चर्चा दूर—दूर तक फैल गई। अरब में व्यापार का एक तरीक़ा था कि धनी लोग मेहनती लोगों को पैसा देकर व्यापार कार्य कराते और उसमें जो मुनाफा होता आपस में बाँट लेते। प्यारे नबी ने इसी तर्ज पर व्यापार किया।

उपरोक्त व्यापारियों में हज़रत ख़दीजा रज़ि० भी थीं। जब उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ईमानदारी और मेहनत की चर्चा सुनी तो बहुत प्रभावित हुईं और उन्होनें आपके साथ पार्टनशिप में बिजसेन करने का प्रस्ताव रखा। आपने इसे स्वीकार किया और उनके व्यापार का सामान लेकर शाम (सीरिया) गए और खूब मुनाफा कमाकर लौटे।

इस सफर से लौट कर आए तीन महीने हुए थे कि बीबी ख़दीजा रज़ि० ने आप सल्ल० के पास निकाह का पैगाम भेजा। उस समय आप सल्ल० की आयु 25 वर्ष थी और बीबी खदीजा की उम्र 40 साल थी और वह विधवा थीं। आपने शादी के प्रस्ताव को खुशी से स्वीकार किया, और कुछ दिनों के बाद आप दोनों ने निकाह कर लिया।

खैर! इसी प्रकार आपके जीवन की गाड़ी चलती रही और आप नेकी और भलाई के कामों में हिस्सा लेते रहे लेकिन जब आप चालीस वर्ष की आयु को पहुँचे तो समस्त सृष्टि में एक ऐसा इंकलाब बरपा हुआ कि जिससे क़ायनात का नियम बदल गया और वह इंकलाब था आप सल्ल० को नुबुव्वत का दर्जा मिलना और आप तमाम नबियों और रसूलों के सरदार ठहराये गये।

आप सल्ल0 को नुबुव्वत का जो ताज पहनाया गया उसका शुभारम्भ इस प्रकार हुआ कि आप दुनिया में फैली बुराइयों और मार—काट से बड़े चिन्तित रहते। अतः आप दुनिया के इन झमेलों से दूर हेरा नामक पहाड़ के ख़ोह में एकांतवास करते और अल्लाह की बातों व कुदरत पर चिन्तन—मनन करते। एक दिन ऐसा हुआ कि एक फरिश्ता जिन्हें जिबरईल अलै0 कहा जाता है प्रकट हुए और अल्लाह का पैग़ाम आपको सुनाया। अरबी भाषा में उस पैग़ाम को ''वह्य'' कहते हैं।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पहली वह्य का आना था कि आप पर ज्ञान का बोझ डाल दिया गया। नादानों को बताना, अन्जानों को सिखाना, अन्धेरे में चलने वालों को रौशनी दिखाना और मूर्ति पूजकों को अल्लाह के नाम से परिचित कराना,आप का काम ठहराया गया।

अरब के लोग हद दरजे के जाहिल, नादान और सत्य मार्ग (इस्लाम धर्म) से भटके हुए थे तथा शिर्क व कुफ़्र (बहुदेववाद और नकारवाद) में ऐसे फंसे थे कि उनकी बुराई सुन भी न सकते थे। सच्चाई की ये आवाज़ जिसके कानों में सबसे पहले पड़ी, वह उनकी पत्नी हज़रत ख़दीजा रज़ि० थीं। उन्होंने सत्य मार्ग (इस्लाम धर्म) को स्वीकार करने में तनिक भी देर न की बल्कि उनका खूब हौसला बढ़ाया। फिर मर्दों में अबूबक्र रज़ि0, बच्चों में हज़रत अली और गुलामों में जैद बिन हारिस रज़ि0 इस्लाम लाये। इन लोगों के इस्लाम लाने के बाद तांता बंध गया जो अभी तक जारी है।

जब लोगों ने इस्लाम को अपना कर सच और हक को अपना ओढ़ना—बिछौना बनाना

शुरू किया तो गुमराहों ने भी सत्यवादियों (मुसलमानों) का जीना मुहाल करना शुरू किया। लेकिन मुहम्मद सल्ल0 ने मुसलमानों से संयम बरतने और सब्र करने को कहा। इधर काफ़िरों का अत्याचार सब्र की हद को पार कर चुका था, अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सताये हुए मुसलमानों के एक ग्रुप को हब्शा (इथोपिया) हिजरत (देश त्याग) करने का आदेश दिया।

अल्लाह की कुदरत कि काफिर जितना भी इस्लाम को दबाना या मिटाना चाहते थे, इस्लाम उतनी तेजी से उभर रहा था और अपना अस्तित्व बना रहा था। इधर काफिरों ने जब देखा की इस्लाम का रेला रूक नहीं रहा है तो मुसलमानों और आप सल्ल0 के परिवार का सामूहिक बहिष्कार कर दिया। ये बहिष्कार इतना हृदय विदारक था कि लोग भूख के मारे बिलबिलाने लगे, बच्चों के माओं की छातियाँ सूख गईं। लोग पेड़ की पत्तियाँ खाते और सूखे चमड़े को भून कर हलक़ में डालते। इस बायकाट का सिलसिला लगभग तीन साल चला। आखिर उन ज़ालिमों में से ही कुछ को दया आई और बहिष्कार को समाप्त किया।

इस बायकाट को खत्म हुए अभी कुछ दिन ही गुज़रे थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर एक बार फिर गम का एक पहाड़ टूटा। प्यारे चचा अबू तालिब जिन्होंने आपको बचपन से पाला और हर मुसीबत में आपके लिए ढाल बने, इस संसार को छोड़ गए। अभी ये गम ताज़ा ही था कि आपकी प्रिय पत्नी हज़रत खदीजा रज़ि0 भी इस नश्वर संसार से कूच कर गयीं। इन दोनों का जाना आपके लिए अपूर्णीय क्षति थी। जब काफिरों ने देखा कि अब अबू तालिब और हजरत ख़ादीजा रज़ि0 जैसी शख़्शि्सयत न रही जो हरदम आपके लिए ढाल बनी रहती थीं तो खुलकर हज़रत मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वार करने लगे। अभी तक उनके हाथ बंधे थे मगर उन दोनों के जाने से मैदान खाली हो गया और वह उनके साथ बेअदबी से पेश आने लगे।

एक बार आप काबा के बारामदे में नमाज़ पढ़ रहे थे। कुरैशी काफिर चौपाल लगाये बैठे थे। नमाज़ पढ़ते देखकर कहने लगे, कोई ऊँट की ओझड़ी लाकर उसकी गर्दन पर रख दे। बस क्या था, एक पागल उठा और पीठ पर उस गन्दगी को डाल दिया। आपकी बेटी हज़रत फातिमा को मालूम हुआ तो किसी तरह उस गन्दगी को हटाया।

एक बार एक बदमाश ने आपकी गर्दन में चादर का फंदा डालकर चाहा कि गला घोंट दे। हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने आकर बचाया और कहा तुम इस आदमी की जान इसलिए लेना चाहते हो कि वह कहता है कि मेरा पालनहार अल्लाह है!!

सत्यमार्ग (इस्लाम धर्म) पर लोगों को चलाने की ज़िम्मेदारी जो अल्लाह ने आपको दी थी उसको पूरा करने के लिए आप लोगों के घर जाते। मक्का के एक–एक आदमी के पास अनेकों बार जाते। इसी के अन्तर्गत आपने ताएफ नामक शहर का रूख किया। वहाँ पहुँचकर आपने वहाँ के सरदारों को इस्लाम का पैग़ाम सुनाया लेकिन उन लोगों में से किसी ने भी स्वीकार न किया। इतने ही पर बस न किया बल्कि आपका मजाक उड़ाया, यहाँ तक कि शहर के बदमाश लड़कों को पीछे लगा दिया। जो आपको पत्थर मारते और शहर से बाहर खदेड़ते जाते। इससे आपके पवित्र पाँव लहुलुहान हो गये और जूते खून से भर गए। किसी तरह आपने एक बाग में पनाह ली।

ताएफ की नाकामी के बावजूद आपके जज्बे में कोई कमी न आई। आपने इरादा किया कि अब एक–एक क़बीले में इस्लाम का सन्देश पहुँचाना है। आपके लिए सबसे बेहतरीन

मौक़ा हज का महीना था जिसमें तमाम अरब के सभी कबीले के लोग हज करने आते। आपने इस अवसर का भरपूर फ़ायदा उठाया और हक का पैगाम हर कबीले तक पहुँचाया। इसका परिणाम ये हुआ कि दूसरे इलाक़े के लोग विशेषतः मदीने के कुछ लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया और अपने क्षेत्र में जाकर इस्लाम धर्म का प्रसार–प्रचार करने लगे। कुछ ही दिनों में मदीने के अधिकांश घरों में इस्लाम फैल गया।

इधर मक्का में मुसलमानों के लिए जगह तंग होती जा रही थी। इस्लाम धर्म पर चलने वालों का जीना दुश्वार किया जा रहा था। यहाँ तक कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल करने की साजिशें की जाने लगीं। अतः आप सल्ल0 ने अल्लाह के हुक्म से मुसलमानों को चुपके से देश त्याग कर मदीने जाने का आदेश दे दिया। मुसलमान एक–एक करके मदीने जाने लगे। इधर आपने भी खुफिया तौर से मदीने जाने की तैयारी शुरु कर दी। मक्का के काफ़िर यद्यपि आपके विरोधी थे मगर आपको अमानतदार मानते थे। अतः अपनी अमानतें उनके यहाँ जमा करते। आपने ये अमानतें हज़रत अली रज़ि0 को सौंपी और काफिरों को चकमा देकर मदीने की राह ली। इस देश त्याग में आपके साथी अबू बक्र रज़ि0 थे। एक लम्बा सफर तय करके आप सल्ल0 मदीने पहुँचे। मदीने वालों ने आपको सर आँखों पर बिठाया और आपका भव्य स्वागत सत्कार किया।

जारी......

❖❖❖

दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरख़्वास्त

हिंदुस्तानी सियासत में शराफत, सदाकत, और ईमानदारी की सबसे रोशन मिसाल, बेबाक क़ौमी व मिल्ली रहनुमा, समाजवादी पार्टी के कद्दावर सीनियर मोस्ट नेता और निजामाबाद आजमगढ़ के पांच बार के विधायक ***आली जनाब आलम बदी आजमी साहब*** *का एक लंबी बीमारी के बाद* ***दिनांक 23 जुलाई 2026*** *को 90 वर्ष की उम्र में इंतेकाल हो गया ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन''।*

मरहूम मशहूर आलिमे रब्बानी अल्लामा शिब्ली नोमानी रह0 के पैतृक गांव मौजा बिंदवल आजमगढ़ के रहने वाले थे, पेशे से इंजीनियर थे लेकिन क़ौमी व मिल्ली दर्द ने उन्हें एक सियासी क़ायद व रहनुमा बना दिया। वह अपनी सादगी, ईमानदारी, साफ गोई, इल्म दोस्ती, और अपनी अवामी ख़िदमत और हर ज़रूरतमंद के लिए हर समय उपलब्ध रहने की वजह से अपने पक्ष व विपक्ष में निरंतर लोकप्रिय होते गए लेकिन धन दौलत, ओहदे और मंसब के लिए कभी अपने जमीर का सौदा नहीं किया।

मरहूम के पांच बेटे और भरा पुरा कुंबा है, अल्लाह सब को सब्रे जमील अता फरमाए, और मरहूम की बाल बाल मगफ़िरत फरमाए, दरजात बुलंद फरमाए, और जन्नत में आला मक़ाम अता फरमाए आमीन।

हम अपने समस्त पाठकों से खुसूसी दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरख़्वास्त करते हैं।

(उप सम्पादक)

अशर-ए-मुबश्शरा

रज़िअल्लाहु अनहुम अजमईन

वह दस सहाब-ए-किराम रज़ि० जिनको आप सल्ल० ने एक ही मज्लिस में जन्नती होने की ख़ुशख़बरी दी उन्हें अशर-ए-मुबश्शरा कहते हैं।

(तिर्मिज़ी शरीफ़: 3747)

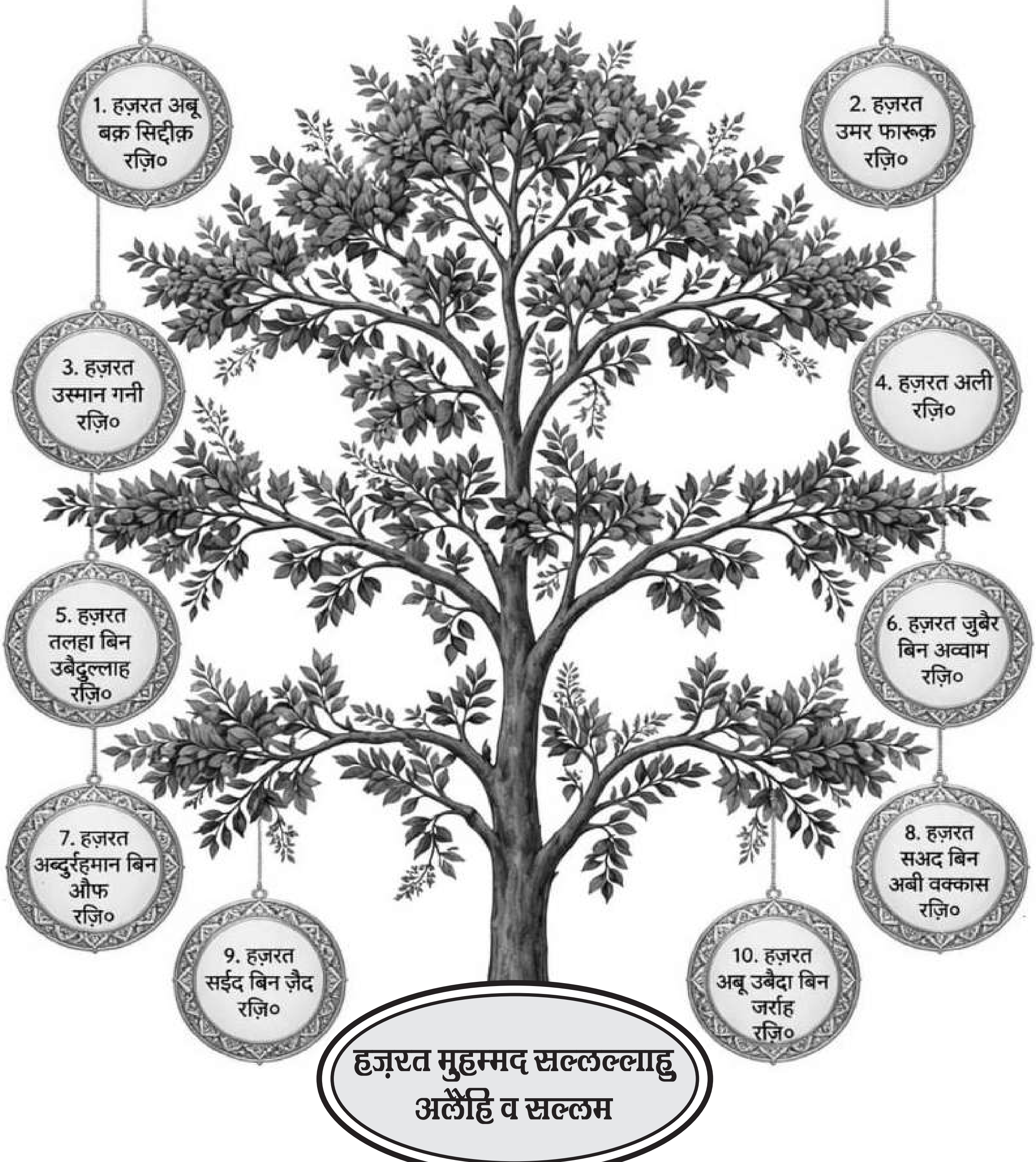

अम्बिया (ईशदूतों) का शहर यरुशलम

इं0 जावेद इक़बाल

तीन हज़ार तीन सौ साल से अधिक पुराना शहर, यह उजड़ता निखरता शहर जो कभी बर्बाद होता है तो कभी शादाब होता है, इसकी तारीख भी अजीब है। यह मोरियाह और सैहून जैसी कई पहाड़ियों के बीच ढलान पर आबाद है। यह दुनिया का इकलौता शहर है जो तीन बड़े धर्मों यहूदी, ईसाई और मुसलमानों के लिए समान रूप से मुकद्दस, महत्वपूर्ण और तीर्थ स्थल का दर्जा रखता है। अनेक नबी–रसूल (ईशदूत) इस धरती पर या इसके आस पास के इलाक़े में आए। यहां के निवासी आज भी स्वयं को नबियों की औलाद समझते हैं। हज़रत दाऊद और हजरत सुलैमान अलै0 इसी शहर में दफन हैं। हजरत ईसा को सूली पर चढ़ाने की नाकाम कोशिश इसी शहर में की गई। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने लगभग 14 साल तक नमाज़ इसी शहर की दिशा में खड़े हो कर पढ़ी। और मुहम्मद सल्ल0 का मेराज का सफ़र भी इसी शहर से शुरू हुआ। गरज यह कि यह शहर तीनों ही बड़े आसमानी धर्मों के लिए विशेष महत्व रखता है। इंसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार यह 3300 साल पुराना शहर है। इस शहर ने बारहा कुदरती आफतें झेली हैं। इंसानों के हाथों भी इसे कई बार उजाड़ा गया मगर यह फिर से गुलगुजार होने में सफल होता रहा। इस पर वह दिन भी गुजरे हैं जब इसे मिट्टी में मिला दिया गया था और इसके बाशिंदे जंगलों में भटकने पर मजबूर कर दिये गए थे।

इस शहर के नाम भी अनेक हैं, इसका सब से पुराना नाम *JEBUS* है, यहूदी और ईसाई इसे यरुशलम कहते हैं जो इब्रानी ज़बान के दो लफ्जों से मिल कर बना है, जिसका मतलब है शहरेअमन। यह नाम हजरत दाऊद के ज़माने से चला आ रहा है। इस शहर का एक नाम ईलिया भी है। इसे गोल्डन सिटी भी कहा जाता है क्योंकि सुबह को सूरज निकलने के समय यहां पर सुनहरे पत्थरों से बने मकान सूर्य की किरनें पड़ते ही जगमगा उठते हैं। अरबों ने इसे हमेशा ही बैतुल मकदस कहा है जिसका मतलब है पाक घर। इसका सबसे अजीब नाम शहरे अमन है, अजीब इसलिए क्योंकि यहां कभी भी बीस साल अमन से नहीं गुजरे। इस पाक और अमन के शहर में कुदरती आफात और इंसानी जंगों की वजह से जितना खून बहा है और जितनी तबाही हुई है उसका बयान करना आसान नहीं है फिर भी जंगी तबाहियों और कुदरती आफात के बावजूद यह शहर आज भी आबाद है और आज भी जंगी हालात से जूझ रहा है। एक तरफ तो यहां की रंगीनियां दुनिया के लाखों लोगों को अपनी तरफ मायल करती रहती हैं और दूसरी तरफ यहां की बेशुमार यादगारें तीनों ही मजहब के लोगों के लिए मुकद्दस मुकाम का दर्जा रखती हैं। हजरत ईसा से दो सौ साल पहले यहूदियों ने इसे पाक शहर ईलिया नाम दिया था। यहूदियों ने हजरत ईसा को सूली पर चढ़ाने की नाकाम कोशिश भी इसी शहर में की थी। कुरआन पाक में अल्लाह तआला ने साफ साफ कहा है कि वे लोग हजरत ईसा को सूली पर चढ़ाने में सफल नहीं हो सके थे, अलबत्ता अपनी कार्रवाई पूरी कर देने का उन्हें भ्रम हो गया था जिसकी वजह से यह ख़बर फैल गई कि हजरत ईसा सूली पर चढ़ा दिए गए जबकि हकीकत यह थी कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल को आसमानों में उठा लिया था

और जो आदमी सूली पर चढ़ाया गया था वह वही मुखबिर था जो हजरत ईसा का विश्वास घाती था, अल्लाह तआला ने उसकी सूरत ईसा अलैहिस्सलाम जैसी बना दी थी, जिस के कारण सूली पर लटकाने वाला अमला धोके में पड़ गया और फिर उसे इसी शहर में दफनाया गया था। यह कुरआन की दी हुई ख़बर है जो कुरआन में महफूज है और कुरआन अल्लाह तआला की आखिरी, पूरी तरह महफूज किताब है। इस घटना के कारण ही ईसाई धर्म के लोग इस शहर को मुकद्दस शहर मानते हैं।

हजरत ईसा से लगभग एक हजार साल पहले इस्राईली बाशिंदों के शासक का नाम दाऊद था उनके बाद उनके बेटे सुलैमान बादशाह बने। यह दोनों बाप बेटे शासक के साथ साथ अल्लाह के नबी भी थे। हजरत सुलैमान ने अपने शासनकाल में एक विशाल भवन बनवाया था जिसका नाम हैकल था, इस भवन का विस्तार उनके बाद आने वाले शासकों ने कराया था। इस भवन के बीच कमरे में एक संदूक रखा गया था जिसमें गुजरे हुए जमाने के नबियों की कुछ निशानियां महफूज थीं।

हज़रत सुलैमान के इंतकाल के बाद यह लोग गृह युद्ध/खानाजंगी में फंस गए, उनमें अनेक धार्मिक और सामाजिक बुराइयां फैल गईं, एक ओर तो वह तौहीद को छोड़कर बुत परस्ती की तरफ मायल हो गये दूसरी तरफ जुल्म, जिना, लूटमार जैसी बुराईयों में फंस गए।

उन्होंने खुदा की किताब तौरेत में फेर बदल कर दिया, उनके आलिम और रिब्बी अपने स्वार्थ के लिए तौरेत की आयतों में तब्दीली करने लगे। अगर कोई इसलाहे मुआशरे का काम करना चाहता तो उसका मजाक उड़ाया जाता और कभी कभी तो ऐसे समाज सुधारकों और नबियों की हत्या करने से भी न चूकते। नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने दूसरी कौमों को उन पर मुसल्लत करना शुरु कर दिया। कुदरती आफतें भी आने लगीं। लूटमार कत्ल व गारतगरी का बाजार गर्म हो गया, खून की नदियां बहीं और अवाम को गुलाम बनाया गया। कई बार यह शहर बर्बाद हुआ और पुनः आबाद हुआ।

हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के 587 वर्ष पूर्व जब इस्राईल वासियों ने बाबुल के बादशाह बुख़्त नस्सर के खिलाफ बगावत की और संधि को तोड़ा तब बुख़्त नस्सर ने यहूदियों पर हमला कर दिया, शहर राख के ढेर में बदल गया, शहर की सड़कों पर खून बह निकला। बहुत लूटमार हुई, असंख्य औरतों व बच्चों को गुलाम बना लिया गया। इस लूटमार में वह संदूक गायब हो गया जिसमें गुजरे ज़माने के नबियों की पवित्र निशानियां थीं। बहुत सी यहूदी मजहब की किताबें जला दी गईं। ज़िन्दा बचे एक लाख यहूदियों को बुख़्त नस्सर ने देश की सीमाओं से बाहर निकाल कर इधर उधर भटकने पर मजबूर कर दिया, वे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जा बसे। याद रहे कि यह ईसा अलैहिस्सलाम से पहले की धटना है इसका ज़िम्मेदार मौजूदा ज़माने की ईसाई या मुसलमान कौमों को नहीं ठहराया जा सकता। यहूदी खुद अपनी शरारतों और चरित्रहीन हरकतों की वजह से बर्बाद हुए थे। हज़रत सुलैमान का बनाया हुआ "हैकल" जैसा विशाल भवन नष्ट हो गया, आसमानी किताब तौरेत गुम हो गई मुतबर्रक संदूक को बुख़्त नस्सर उठा ले गया जो आज तक न मिला, उसी की याद में यहूदी आज भी सुलैमान अलैहिस्सलाम के नाम का रोज़ा रखते हैं और सामूहिक रूप से रोने का कार्यक्रम करते हैं। बचे खुचे यहूदियों को उस समय फरात नदी के किनारे पर बसाया गया था। उन्होंने उस बस्ती का नाम "तल–अबीब" रखा था। मौजूदा ज़माने में इस्राईल देश की राजधानी "तल–अबीब" उसी घटना की याद दिलाता है।

हजरत ईसा अलैहिस्सलाम से 539 साल पहले ईरान के

बादशाह की इजाज़त से यहूदी फिर अपने मुल्क लौटे और उन्होंने हैकल की इमारत को फिर से तामीर कराया। बूढ़े रिब्बियों की मदद से, जिन्हें तौरेत याद थी, तौरेत को लिखवाया। मगर इंसानी भूल और यहूदी फितरत के सबब उसमें फेर बदल भी हो गये, साथ ही ईश्वरीय शैली (उस्लूब खुदावंदी) में भी तब्दीली हो गयी। इस तरह यहूदी अपने वतन में फिर से आबाद हो गये मगर उनकी मानसिकता में कोई तब्दीली नहीं आई। वे नेक और भले समाज सुधारकों और आने वाले नबियों को परेशान करते रहे और कभी कभी तो वह नबियों तक को क़त्ल करते रहे। पड़ोसी राज्यों से छेड़छाड़ उनकी आदत थी जिसके नतीजे में बार बार उन पर आफतें भी आती रहीं, कभी जीत तो कभी हार चलती रही। आखिर वह वक़्त आया जब हजरत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश हुई और खुदा के सच्चे सीधे दीन की तरफ राहनुमाई शुरू की। फितरी तौर पर अकसरियत ने उनकी मुखालिफत की और उन की हत्या की साजिशें रचना शुरू कर दीं आखिर एक दिन अपने ख़याल के मुताबिक उन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम को सूली पर चढ़ा दिया। कुरआन हक़ीक़त से आगाह करते हुए कहता है कि वह भ्रम में डाल दिए गए थे। अल्लाह तआला ने उन्हें महफ़ूज़ रखा और अपने पास आसमानों में उठा लिया था, जो शख़्स सूली पर चढ़ाया गया था वह वही मुखबिर था जिसने हुकूमत के कारिंदों को ईसा अलैहिस्सलाम का पता बताया था। अल्लाह तआला ने उसकी सूरत ईसा अलैहिस्सलाम जैसी बना दी थी।

चालीस साल भी नहीं गुज़रे थे कि यहूदियों ने रोम और स्पेन से छेड़ छाड़ शुरू कर दी और तीन हज़ार रोमी फौजियों को मार डाला, नतीजा वही हुआ जो होना था, रोमियों ने शहर की ईंट से ईंट बजा दी। इस जंग के बीच खुद यहूदियों ने हैकल की इमारत को आग लगा दी इस तरह हैकल एक बार फिर तबाह हो गया।

अब ईसाइयों और यहूदियों के बीच नफ़रत की दीवार खड़ी हो गई और लगातार जंगें होती रहीं और शहर जंग का मैदान बनता रहा कभी ईसाई हार जाते तो कभी यहूदी। दोनों ही हालतों में यह पाक शहर उजड़ता, बर्बाद होता रहा।

इन हालात में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की रिसालत का दौर शुरू हुआ, उसी ज़माने में रोम के बादशाह हरक्यूलस ने ईसाइयों की शिकस्त का बदला लेने के लिए यरुशलम पर हमला कर दिया। यहूदियों की हार हुई और ईसाइयों ने यहूदियों को शहर से निकाल कर मुकम्मल कब्जा जमा लिया।

सन् 638 ईस्वी में यरुशलम के बड़े पादरी सूफरोन्यूस *(Sophronius)* ने मुसलमानों के दूसरे खलीफा हज़रत उमर को शहर की चाबियां सौंप दीं क्योंकि उसने उमर रज़ि0 को हजरत मुहम्मद सल्ल0 के खलीफा के रूप में पहचान लिया था। वह अपनी मजहबी किताबों में उनका परिचय पढ़ चुका था। वह जानता था कि शहर पर विजय पाने वाला व्यक्ति इस सादगी से आएगा कि खुद पैदल चल रहा होगा और उसका गुलाम अपनी बारी के मुताबिक सवारी पर बैठा होगा। क्योंकि सवारी का जानवर एक ही था इसलिए खलीफा और गुलाम ने बारी बारी से उस पर बैठ कर सफर पूरा किया था। ऐसे इंसाफ पसंद खलीफा से नाइंसाफी और जुल्म की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। लिहाजा पुर अमन ढंग से हंसी खुशी शहर की हुक्मरानी हज़रत उमर रज़ि0 को सौंप दी गई। यरूशलम की धरती ने बिला शुब्ह पहली बार हुकूमत की तब्दीली हंसते मुस्कुराते हुए देखी, न कोई तबाही हुई और न कहीं खून बहा। इतना ही नहीं, जब नमाज़ का वक़्त आया पादरी की इच्छा के बावजूद गिरजा से अलग हटकर नमाज़ पढ़ी गई, यह इसलिए कि भविष्य

में मुसलमान किसी दूसरे मजहब की इबादतगाह को हथियाने की कोशिश न करें।

उस समय जिस संधि पत्र (मुआहिदा) पर हस्ताक्षर किए गए थे उसकी शर्तों को देखने से, ईसाई समाज की यहूदियों से शदीद नफ़रत का अंदाजा लगाया जा सकता है क्योंकि पादरियों और उनके रहनुमाओं ने यह शर्त भी रखी थी कि ईलिया नगर (यरुशलम) में किसी यहूदी को कभी नहीं बसाया जाएगा। इस संधि की शर्तों में यह भी लिखा था कि गिरजा घरों और सलीबों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा, न वह ढाए जाएंगे न उनकी आमदनी जब्त की जाएगी। इस संधि का जिक्र सभी मुसतनद इतिहास की किताबों में देखा जा सकता है। इस संधि का अनुपालन तुर्की के उस्मानिया शासन काल तक किया जाता रहा जिसकी वजह से किसी यहूदी को यरुशलम में बसने की इजाज़त नहीं थी।

यहूदियों की फितरत में हमेशा से विद्रोहः—

आतंक और मुल्क की अर्थव्यवस्था *(Economy)* पर कब्ज़ा ज़माने की आदत रही है। वे जहां भी रहे उचित—अनुचित की परवाह किए बगैर सूद और कर्ज के जरिए वहां के आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण करने की कोशिश करते, शासकों के विरुद्ध साजिशें रचते और उनकी हत्या करने से भी न चूकते, इस तरह मुल्क में बदअमनी फैलाना, जनता का शोषण, और चरित्रहीनता को बढ़ावा देना उनका मुख्य काम होता था। इसीलिए हर मुल्क में जहां भी वह रहे कुछ समय बाद जनता में उनके खिलाफ़ नफ़रत और गुस्से का माहौल बन जाता था। ब्रिटेन में यहूदी सन् 1190 में पहुंचे और 1290 में एक सौ साल बाद निकाल दिए गए। 1858 में फिर उन्हें वहां रहने बसने की इजाजत मिली। फ्रांस से सन् 1306 में निकाले गए और कई सौ साल बाद वहां दोबारा पहुंचने में सफल हो सके। सन् 1881 में रूस के बादशाह जार को क़त्ल करने की साजिश के नतीजे में अवाम का गुस्सा फूट पड़ा और उन्हें मुल्क छोड़कर भागना पड़ा। सन् 1894 में फ्रांस की फौज के एक यहूदी अफसर ने फौज के खुफिया राज जर्मनी को बेच दिए, जिस की वजह से अवाम में यहूदियों की मुखालिफत इतनी बढ़ी कि उन्हें बड़ी तादाद में फ्रांस से भगना पड़ा। मुखतसर यह कि दुनिया में जहां भी यहूदी बसे अपनी हरकतों के सबब वहां से निकाले गए सन् 1840 से सन् 1900 तक मुखतलिफ मुल्कों से भाग कर केवल अमेरिका में पनाह लेने वाले यहूदियों की संख्या 285000 थी जबकि फिलिस्तीन की तरफ जाने वाले केवल 35000 ही थे।

जब अमेरिका का संविधान बनाया जा रहा था तब राष्ट्रपति बिनयामिन फ्राकलिन ने एक तकरीर में यहूदियों के खतरे से सावधान करते हुए कहा था "यहूदी जिस इलाके में पहुंचते हैं वहां के अख़लाक़ी किरदार में गिरावट आती है, तहजीब बर्बाद हो जाती है, मआशी हालात असंतुलि हो जाते हैं, वे जहां रहते हैं वहां की अर्थव्यवस्था का गला घोंटने की कोशिश करते हैं जैसा कि हम पुर्तगाल और स्पेन में देख चुके हैं, यदि उनको अमेरिका से संविधान के अनुसार शीघ्र न निकाला गया तो आने वाले सौ साल में ये बड़ी संख्या में हमारे शहरों में फैल जायेगे और यहां की हुकूमत में घुस जायेंगे और हमारे मुल्क का इंतजाम बिगाड़ देंगे, जिसे हमने अपना खून अपनी जान और अपना माल देकर संवारा है। अगर यहूदियों को हमारे मुल्क से दो सौ साल तक न निकाला गया तो हमारे बच्चे उनके ऐश व आराम के लिए खेतों में काम करने पर मजबूर होंगे और यह अपने महलों में बैठ कर मौज करेंगे।

इस तरह योरोप अमेरिका और रूस ने मिलकर यहूदियों से छुटकारा हासिल करने के लिए एक खूबसूरत मनसूबा

बनाया और उनका ध्यान फिलस्तीन की उस ज़मीन की तरफ मोड़ दिया जहां से वह सन् 628 ईस्वी में शहंशाह हरक्यूलस के द्वारा निकाले गए थे। फिलस्तीन में बसने की चाहत यहूदियों के दिल में हमेशा से थी मगर अपनी ताक़त से वह इसमें कभी कामयाब नहीं हो सके थे। उनकी यह ख़्वाहिश इतनी शदीद थी कि इस मौक़े पर दुनिया भर में बिखरी हुई यहूदी क़ौम को जल्द से जल्द फिलस्तीन मुन्तकिल करने के लिए खुद यहूदी रहनुमा अपनी ही क़ौम पर जुल्म के पहाड़ तोड़ने से भी नहीं चूके। इसका खुला सबूत हिटलर द्वारा दूसरी आलमी जंग के दौरान जर्मनी में साठ लाख यहूदियों पर किया जाने वाला वह जुल्म है जिसे दुनिया होलोकास्ट के नाम से जानती है। ज़िन्दा बचे यहूदी फिलस्तीन की तरफ जानवरों की तरह हंका दिये गए इस तरह अपनी ही क़ौम के हजारों बेगुनाह इंसानों को भूख प्यास और मौत के गढ़े में धकेल दिया गया था। फिर इसके बाद योरोप अमेरिका और रूस की मदद से अत्यंत आधुनिक हथियारों के साथ उन्होंने सन् 1948 में फिलस्तीन पर हमला बोल दिया और निहत्थे बेगुनाह शहरियों, औरतों–बच्चों पर बेदर्दी से टूट पड़े। बैतुल मुकद्दस/यरूशलम की गलियों में एक बार फिर खून की नदियां बह निकलीं, अमन व सलामती का शहर जख्मों से चूर कराहने लगा।

इस तरह योरोप अमेरिका वगैरह ने मिलकर यहूदियों की साजिशों से खुद को बचाने के लिए अरब देशों को जंग और तबाही के गढ़े में ढकेल दिया। यह वही ज़माना था जब ब्रिटेन ने भारतीय उपमहाद्वीप में एक साजिश रची थी और अपने नापाक स्वार्थों की पूर्ति के लिए भारत का बंटवारा कराया था।

जिसके नतीजे में आज तक न अरब देशों में अमन क़ायम रह सका, न भारत पाकिस्तान में चैन व सुकून बरकरार रहा और फिलस्तीन का हाल तो दुनिया देख रही है कि उसे खंडहर में तब्दील कर दिया गया है, हज़ारों लाखों बूढ़ों बच्चों औरतों की हत्या कर दी गई या उन्हें अपाहिज बना दिया गया मगर वाह रे यहूदी फितरत कि उसकी खून की प्यास है कि बुझती ही नहीं।

❖❖❖

दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरख़ास्त

*दफ़्तर मालियात दारूल उलूम नदवतुल उलमा के कारकुन जनाब अहमद मियां की वालदा, **जाकिरा ख़ातून** उर्फ बाजी का दिनांक 18 अगस्त 2026 को इंतेकाल हो गया ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन''।*

मरहूमा बहुत ही नेक, दीनदार, नमाज़ रोजे की पाबंद, बहुत ही अख़लाक़मंद, अपने समस्त परिवार और रिश्तेदारों एवं पड़ोसियों का हर संभव ख़्याल रखने वाली खातून थीं।

हज़रत नाजिम साहब ने असर बाद जनाज़े की नमाज़ अदा कराई और डालीगंज कब्रिस्तान में तदफ़ीन हुई।

मरहूमा के चार बेटियां और एक बेटे भाई अहमद मियां हैं। अल्लाह सब को सब्रे जमील अता फरमाए और मरहूमा की मग़फ़िरत फरमाए, दरजात बुलंद फरमाए, और जन्नत में आला मक़ाम अता फरमाए आमीन।

हम अपने समस्त पाठकों से खुसूसी दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरख़्वास्त करते हैं।

(उप सम्पादक)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

इन्सानियत के नजात दहिन्दा (खेवनहार)

सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी

आज के इस तरक़्क़ी याफ़्ता और साइंसी दौर में इन्सान ने बिला शुबह बेमिसाल तरक़्क़ियाँ हासिल कर ली हैं। उसने ज़मीन की हदों को पार करते हुए ख़ला की वुस्अतों में क़दम रखा और काएनात के दूर–दराज़ सय्यारों तक भी पहुँच हासिल कर ली। लेकिन माद्दी तरक़्क़ी और साइंसी कामयाबियों की इस दौड़ में वह अपनी फ़ितरी ज़िन्दगी के हक़ीक़ी मक़सद से दूर होता चला गया। रब की मर्ज़ी और उसकी दी हुई हिदायतों को पीछे छोड़ कर इन्सान ने अपनी ज़िन्दगी अपनी ख़्वाहिशों के मुताबिक़ और मनमाने तरीक़े से गुज़ारने की कोशिश की, यहाँ तक कि वह अपने पैदा करने वाले रब को ही भुला बैठा। अल्लाह तआला ने अपने नबियों और रसूलों के ज़रिये इन्सान को ज़िन्दगी गुज़ारने का जो पाकीज़ा, संतुलित और फ़ितरी तरीक़ा अता किया था, इन्सान उस से भी बड़ी हद तक ग़ाफ़िल हो गया।

यही ग़फ़लत आज इन्सान की बेक़रारी और बेचैनी की बुनियादी वजह बन चुकी है। बज़ाहिर उसे ज़िन्दगी की हर तरह की सहूलतें, आराम और वसायल मिले हुए हैं, लेकिन इसके बावजूद उसके दिल को वह सुकून और इत्मीनान हासिल नहीं जो एक कामयाब और सुकून भरी ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी है। रूहानी ख़ालीपन, ज़ेहनी कशमकश और अन्दुरूनी बेचैनी ने उसकी ज़िन्दगी को इस तरह घेर लिया है कि वह आराम व आसाइश के ढेर में भी सुकून की तलाश में परेशान है। चुनांचे आज का इन्सान एक ऐसे सच्चे रहबर व रहनुमा की तलाश में है जो उसे ज़िन्दगी की सही सिम्त दिखा सके, उसे उसके हक़ीक़ी मक़सदे हयात की पहचान करा सके, और उसे ऐसी राह पर गामज़न कर दे जो दुनिया में दिली सुकून व इत्मीनान और आख़िरत में कामयाबी व नजात की ज़ामिन हो। एक ऐसा खेवनहार जो उसकी भटकी हुई कश्ती को हिदायत व सुकून के किनारे तक पहुँचा सके।

इसी इन्सानी फ़ितरत के ऐन मुताबिक़ परवरदिगारे आलम ने हमारे प्यारे नबी हज़रत मोहम्मद सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसी हस्ती को इस दुनिया में भेजा। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तमाम इन्सानों के लिए अपनी मुबारक ज़िन्दगी में अपने रब की मर्ज़ी के मुताबिक़ हर वह अमल करके दिखा और बता दिया जिसकी इन्सानी ज़िन्दगी में ज़रूरत थी..... है ..... या फिर आइन्दा होगी। जिन आमाल के ज़रिये इन्सान को दुनिया व आख़िरत में हमेशा के लिए दिली सुकून व इत्मीनान हासिल होना चाहिए वह सारे आमाल हमारे नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुनिया में करके दिखा दिये और दुनिया को यह बता दिया कि असल सुकून व नजात रसूल के तरीक़े में ही मिल सकती है।

हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम जहानों के लिए रहमत और पूरी इन्सानियत के हक़ीक़ी नजात दहिन्दा (खेवनहार) बन कर इस दुनिया में तशरीफ़ लाए। आप सल्ल० ने अंधेरों में डूबी हुई दुनिया को तौहीद के नूर से रौशन किया, अख़्लाक़ी क़द्रों की बालादस्ती क़ायम की और इन्सान को उसका असल मक़ाम और अज़्मत बख़्शी।

आप सल्ल० की आमद से पहले दुनिया अख़्लाक़ी, समाजी

और रूहानी ऐतबार से भरपूर ज़वाल का शिकार थी। समाज में जिहालत आम थी। ताक़तवर का ज़ोर था और कमज़ोरों पर ज़ुल्म होता था। इन्सानी हुक़ूक़ की पामाली के साथ औरतों को हक़ीर समझा जाता था यहाँ तक कि छोटी–छोटी बच्चियों को ज़िन्दा दफ़्न कर दिया जाता था। बुत परस्ती और नाइंसाफ़ी का हर तरफ़ दौर–दौरा था। इन्सान अपने हाथों से बनाए हुए बुतों को अपना ख़ुदा बनाए हुए था। क़बायली दुश्मनियाँ नस्ल दर नस्ल चली आ रही थीं जो ख़त्म होने का नाम ही नहीं लेती थीं।

नबी–ए–रहमत ने अल्लाह के हुक्म से इन्सानियत को एक ऐसा आलमी और मुकम्मल निज़ाम अता किया जो तमाम मसायल का हल था। लोगों को एक अल्लाह की इबादत की तरफ़ बुलाया, जिस से दुनिया के तमाम झूठे ख़ुदा और इम्तियाज़ी बुतों की मुहब्बत लोगों के दिलों से ख़ुद बख़ुद ख़त्म होती चली गई। आप[सल्ल0] ने झूठ, फ़रेब, मक्कारी, चालबाज़ी, ग़ीबत, इल्ज़ाम लगाने, नापतौल में कमी, रिश्वतख़ोरी और ज़ुल्म व सितम की बुराईयों को ख़त्म करने का पाठ पढ़ाया। आपने सच्चाई, अमानतदारी, आपसी मेल–मुहब्बत, भाईचारा, नर्मी व भलाई, एक–दूसरे की ख़बरगीरी, एक–दूसरे को माफ़ करना और आपसी तआवुन व मदद और एक–दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने पर बहुत ज़ोर दिया। आपने मसावात व बराबरी का ऐसा दर्स दिया कि ज़ात–पात, रंग–नस्ल, ख़ानदान–इलाक़े, अमीर–ग़रीब, अक़लमन्द–नासमझ, गोरे–काले सबके फ़र्क़ को मिटा दिया और इन्सानों को एक आदम की औलाद बना दिया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अमन और भाईचारे के पैग़ाम के ज़रिये सदियों के दुश्मनों को भाई–भाई बना दिया और समाज में अमन का बोल बाला कर किया। आप[सल्ल0] की सीरते तैय्यिबा ने अख़्लाक़ की बुलन्द तरीन मंज़िलें तय कीं।

आज मग़रिबी इस्तेमारी साम्राज्यवादी निज़ाम ने औरतों को मर्दों की जिस्मानी और नफ़्सियाती ख़िलक़त से मुख़्तलिफ़ होने के बावजूद मसावात और ख़ुद मुख़्तारी के नाम पर घर और ऑफ़िस की ज़िम्मेदारियों से बाँध कर 24 घंटे की ड्यूटी पर लगा दिया है और दुनिया के सामने औरतों की नुमाइश करते हुए बराबरी का ढोंग रचा जा रहा है। इस निज़ाम पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि इस घटिया निज़ाम में अकसर औरतों के जिस्म और उसकी कशिश की ही क़ीमत अदा की जाती है। जबकि अल्लाह के नबी ने औरत को पर्दे जैसी अज़ीम नेमत अता करते हुए उसको उसके असल मक़ाम तक पहुँचाया है। नबी पाक[सल्ल0] ने औरतों को वह हुक़ूक़ अता किये जिन हुक़ूक़ की वह हक़दार थीं और अगर आज के ज़माने में उन पर अमल किया जाए तो औरतों की एक बड़ी परेशान हाल तादाद को सुकून व इत्मीनान और अच्छी ज़िन्दगी हासिल हो सकती है। नबी करीम ने माँ, बहन, बेटी और बीवी की हैसियत से औरत को इज़्ज़त, ऐहतराम और विरासत में हक़ देते हुए उसकी इज़्ज़त व वक़ार को बढ़ाया और उसकी ज़िन्दगी को आसान बना दिया।

नबी करीम[सल्ल0] ने इन्सान को इन्सान की ग़ुलामी से निकाल कर सिर्फ़ एक ख़ुदा की बन्दगी पर लगा दिया। आप[सल्ल0] ने ग़ुलामों और मज़दूरों से अच्छे बर्ताव का हुक्म दिया और उन्हें समाज का आज़ाद और इज़्ज़त वाला फ़र्द बनाया। ग़ुलामों के बारे में अल्लाह के नबी ने फ़रमाया कि ''यह तुम्हारे भाई और ख़िदमत करने वाले हैं तो अपने भाई को जो ख़ुद खाते हो वह खिलाओ और जो ख़ुद पहनते हो वैसा ही उन्हें भी पहनाओ और उन पर उनकी ताक़त से ज़्यादा बोझ न डालो और अगर कोई सख़्त काम हो तो उसमें उनके मददगार बनो।'' (बुख़ारी, हदीसः 31) हज़रत ज़ैद बिन हारिसा जो

नबी पाक के ग़ुलाम थे जब उनके वालदैन उनको अपने पास ले जाने के लिए आए तो उन्होंने अपने वालदैन के साथ जाने के बजाए अल्लाह के नबी के साथ रहना पसन्द किया और रसूल को छोड़ कर अपने बाप के साथ जाने से इनकार कर दिया। (फ़त्हुल बारी, पेजः 69) ग़ुलामों के बारे में अल्लाह के नबी ने यहाँ तक फ़रमाया कि कोई ग़ुलाम या लौंडी को ''मेरा ग़ुलाम'' या ''मेरी लौंडी'' न कहे बल्कि उन्हें ''मेरा बेटा'' या ''मेरी बेटी'' कहे। (सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब) और इस सुलूक के ज़रिये आज के ज़माने में भी दुनिया को अपने मातहतों और कामगारों के साथ बेहतरीन सुलूक करने का रास्ता दिखाया जिस से यह दबे–कुचले लोग भी इस दुनिया में इज़्ज़त व आज़ादी की ज़िन्दगी बसर कर सकें।

नबी करीम[सल्ल०] ने पड़ोसियों के हुकूक़ का बहुत ही ज़्यादा ख़याल रखा, और फ़रमाया कि जिबरईले अमीन अलैहिस्सलाम मुझे पड़ोसियों के साथ बेहतरीन सुलूक करने पर इतना ज़्यादा ज़ोर देते रहे कि मुझे इस बात का एहसास होने लगा कि अनक़रीब पड़ोसियों को भी जायदाद व विरासत में हिस्सेदार बना दिया जाएगा। अल्लाह के नबी का अख़्लाक़ सिर्फ़ मुस्लिम पड़ोसी के साथ ही अच्छा नहीं था बल्कि ग़ैर मुस्लिम पड़ोसी के साथ भी वह बराबरी का मामला करते थे, उनके बीमारों की अयादत करते, उनके ज़रूरत मन्दों की मदद करते और उन से हमेशा नर्मी से बातचीत करते थे।

आपका ज़ाती किरदार आपके पैग़ामे हक़ का सबसे बड़ा सुबूत था। तायफ़ का वाक़िआ हो या फ़त्हे मक्का, आपने अपने जानी दुश्मनों को भी माफ़ कर दिया। राहे हक़ में बेपनाह तकलीफ़ें बर्दाश्त कीं लेकिन कभी बदला लेने के बारे में नहीं सोचा और हमेशा दरगुज़र करने और माफ़ करने का मामला किया और अपने अस्हाब व उम्मतियों को इसकी बराबर तलक़ीन करते रहे। आपने क़ानून को सबके लिए बराबर रखा, और अपने ज़रिये दिये गये फ़ैसलों में हमेशा अद्‌ल व इंसाफ़ से काम लिया। और अद्‌ल व इंसाफ़ की ऐसी मिसाल पेश की कि दुनिया आज तक ऐसी मिसाल पेश करने से आजिज़ है।

ग़रज़ कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्सानियत को जिहालत के गढ़े से निकाल कर रौशनी की तरफ़ लाने का अज़ीम तोहफ़ा उम्मत के सामने पेश किया। नबी करीम के उस्व–ए–हसना पर नज़र डालते हुए यक़ीनी तौर पर यह कहा जा सकता है कि जो शख़्स भी अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म के इन तरीक़ों और इन तालीमात पर अमल करेगा उसकी दुनिया व आख़िरत संवर जाएगी, उसे दुनिया में तो दिली सुकून व इत्मीनान हासिल होगा ही बल्कि आख़िरत की राहें भी उसके लिए आसान से आसान होती चली जाएंगी, फिर उसे किसी और सहारे या किसी और रास्ते पर चलने की कोई ज़रूरत ही न रहेगी।

यक़ीनन आज भी दुनिया के तमाम मसायल का सिर्फ़ और सिर्फ़ एक वाहिद हल आप सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात और सीरते तैय्यिबा पर अमल करने में ही पोशीदा है। बेशक हमारे नबी–ए–मुकर्रम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही दुनिया के वह अज़ीम नजात दहिन्दा हैं जिनके रास्ते पर चल कर तमाम इन्सानियत अपनी मंज़िल को पा सकती और दुनिया व आख़िरत का सुकून हासिल कर सकती है। आपकी लाई हुई तमाम तालीमात व हिदायात क़यामत तक आने वाले तमाम इन्सानों के लिए राहे हिदायत और आपका तरीक़ा ही सबके लिए नजात दिलाने वाला है।

❖❖❖

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियाँ और औलादें

उम्महातुल मोमीनीन (रज़ि०)

1. हजरत ख़दीजा बिन्त खुवैलिद (रज़ि०) (वफात—10 नबवी साल)
2. हजरत सौदा बिन्त ज़मआ (रज़ि०) (वफात—22 हिजरी)
3. हजरत आयशा बिन्त अबू बक्र (रज़ि०) (वफात—58 हिजरी)
4. हजरत हफ़्सा बिन्त उमर (रज़ि०) (वफात—45 हिजरी)
5. हजरत जैनब बिन्त खुजैमा (रज़ि०) (वफात—4 हिजरी)
6. हजरत उम्मे सलमा बिन्त सुहैल (रज़ि०) (वफात—59 हिजरी)
7. हजरत जैनब बिन्त जहश (रज़ि०) (वफात—20 हिजरी)
8. हजरत जुवैरिया बिन्त हारिस (रज़ि०) (वफात—56 हिजरी)
9. हजरत उम्मे हबीबा बिन्त अबू सुफयान (रज़ि०) (वफात—44 हिजरी)
10. हजरत सफ़िय्या बिन्त हुयय (रज़ि०) (वफात—50 हिजरी)
11. हजरत मैमूना बिन्त हारिस (रज़ि०) (वफात—51 हिजरी)

औलाद-ए-पाक - साहबजादे

1. हजरत क़ासिम (रज़ि०) (हजरत ख़दीजा रज़ि०) (वफात- बचपन में)
2. हजरत अब्दुल्लाह (रज़ि०) (हजरत ख़दीजा रज़ि०) (वफात: बचपन में)
3. हजरत इब्राहीम (रज़ि०) (हजरत मारिया किब्तिया रज़ि०) (वफात: 10 हिजरी में)

औलाद-ए-पाक - साहबजादियां

1. हजरत जैनब (रज़ि०) (हजरत ख़दीजा रज़ि०) (वफात: 8 हिजरी में)
2. हजरत रुक़य्या (रज़ि०) (हजरत ख़दीजा रज़ि०) (वफात: 02 हिजरी में)
3. हजरत उम्मे कुलसुम (रज़ि०) (हजरत ख़दीजा रज़ि०) (वफात: 09 हिजरी में)
4. हजरत फातीमा जहरा (रज़ि०) (हजरत ख़दीजा रज़ि०) (वफात: 11 हिजरी में)

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

नबी (सल्ल0) के जीवन संबंधित सवाल-जवाब

प्रश्नः मक्का मुकर्रमा में अकाल के दौरान, जो नबी (सल्ल0) की शादी के बाद पड़ा था, आप (सल्ल0) ने अपने चचा अबू–तालिब की तंगदस्ती दूर करने के लिए क्या किया?

उत्तरः नबी (सल्ल0) ने अपने चचा हज़रत अब्बास (रज़ि0), से जो बहुत अमीर आदमी थे, फरमाया कि ''इस अकाल में चचा अबू–तालिब की मदद करनी चाहिए। अली (रज़ि0) को परवरिश के लिए मैं अपने पास ले आता हूँ और जाफर (रज़ि0) को आप अपने पास रख लें।'' हज़रत अबू–तालिब के ये दोनों बेटे इस तरह परवरिश पाते रहे।

प्रश्नः नुबुव्वत के वक़्त नबी (सल्ल0) की उम्र क्या थी?

उत्तरः नुबुव्वत के वक़्त आप सल्ल0 की उम्र 40 साल थी।

प्रश्नः वह्यी नाज़िल होने के बाद जब नबी (सल्ल0) पर घबराहट तारी हुई तो उस वक़्त हज़रत खदीजा (रज़ि0) ने आप (सल्ल0) को तसल्ली देते हुए क्या कहा?

उत्तरः हजरत खदीजा (रज़ि0) ने नबी (सल्ल0) को तसल्ली देते हुए कहा कि अल्लाह आपको कभी हलाक नहीं करेगा क्योंकि आप गरीबों और बेसहारा लोगों की मदद करते हैं। फिर वे नबी (सल्ल0) को अपने चचेरे भाई वरका–बिन–नौफिल के पास ले गईं, जो राहिब थे और आसमानी किताबों के आलिम थे।

प्रश्नः नबी (सल्ल0) की मुबारक ज़बान से वह्यी नाज़िल होने का वाक़िआ सुनकर वरका –बिन–नौफिल ने क्या कहा ?

उत्तरः ''यह वही नामूसे–अकबर (बड़ा फरिश्ता) है जिसे अल्लाह ने मूसा (अलै0) के पास भेजा था। काश! मैं आपकी पैगम्बरी के ज़माने में ताकतवर और जवान होता। काश! मैं उस वक़्त तक जिन्दा रहूँ, जब आपकी कौम आपको वतन से निकालेगी।''

प्रश्नः नबी (सल्ल0) ने सबसे पहले इस्लाम की दावत किसको दी?

उत्तरः अपनी बीवी हज़रत खदीजा (रज़ि0) को।

प्रश्नः आमुल–हुज्न (गम का साल) किसे कहते हैं?

उत्तरः जिस साल हजरत खदीजा (रज़ि0) और हज़रत अबू–तालिब का इन्तिकाल हुआ।

प्रश्नः नबी (सल्ल0) के उन चचा का नाम बताइए जिन्होंने मुसलमान न होने के बावजूद भी आप (सल्ल0) की बहुत मदद की थी और आप (सल्ल0) का भरपूर साथ दिया था।

उत्तरः हजरत अबू–तालिब ।

प्रश्नः जब काफिरों के दबाव से परेशान होकर नबी (सल्ल0) के चचा हजरत अबू–तालिब ने आप (सल्ल0) से कहा था ''भतीजे बुतपरस्ती का रद्द न किया करो, वरना मैं भी तुम्हारी कुछ हिमायत न कर सकूँगा।'' तो आप (सल्ल0) ने इस मौके पर क्या जवाब दिया था?

उत्तरः नबी सल्ल0 ने फरमाया, ''चचा अगर ये लोग मेरे दाहिने हाथ पर सूरज और बाएँ हाथ पर चाँद लाकर रख दें तब भी मैं अपने काम से न हटूंगा और खुदा के हुक्म में से एक हर्फ भी कम या ज़्यादा न करूँगा। चाहे इस काम में मेरी जान ही जाती रहे।''

प्रश्नः जब नबी (सल्ल0) ने ताइफ शहर जाकर वहाँ के लोगों को इस्लाम की दावत दी तो उन्होंने क्या जवाब दिया?

उत्तरः ताइफ के लोगों ने नबी (सल्ल0) की सख्त मुखालिफत की। आप (सल्ल0) पर पत्थर बरसाए जिससे आप (सल्ल0) लहूलुहान हो गए।

❖❖❖

मीडिया के क्षेत्र में पाँच आवश्यक क़दम

मौलाना मुनव्वर सुल्तान नदवी

इक्कीसवीं शताब्दी को मीडिया, सूचना और नैरेटिव की शताब्दी कहा जाता है। आज क़ौमों की ताक़त का पैमाना सिर्फ उनकी अर्थव्यवस्था, राजनीति या सैन्य शक्ति नहीं है, बल्कि यह भी है कि वो अपनी बात कितने असरदार अंदाज़ में दुनिया के सामने रखती हैं, अपने बारे में जनमत को किस हद तक प्रभावित करती हैं और अपने विचारों और मूल्यों का प्रचार कितने असरदार तरीक़े से करती हैं।

मौजूदा दौर में मीडिया सिर्फ सूचना पहुँचाने का ज़रिया नहीं रहा, बल्कि यह सोच बनाने, प्राथमिकताएं तय करने और वैचारिक दिशा तय करने का सबसे ताकतवर जरिया बन चुका है। इसलिए जिस क़ौम के पास चुस्त मीडिया और दमदार बयान करने की ताक़त होगी, वही वैचारिक ताक़त भी हासिल करेगी।

मौजूदा स्थिति भारतीय मुसलमानों के लिए एक चुनौती भी है और एक मौक़ा भी। एक तरफ़ उनके बारे में अलग—अलग धारणाएं और बयान गढ़े जाते हैं, तो दूसरी तरफ़ डिजिटल मीडिया ने यह सुविधा दे दी है कि सीमित संसाधनों के बावजूद हर व्यक्ति और संस्था समय पर अपनी आवाज़ सही जगह तक पहुँचा सकता है। हालांकि इसके लिए सिर्फ संसाधनों तक पहुँच काफी नहीं है, बल्कि स्पष्ट रणनीति, वैचारिक सूझबूझ, नैतिक मार्गदर्शन और पेशेवर कुशलता भी ज़रूरी है।

इसी पृष्ठभूमि में मीडिया के मैदान में करने के लिए कुछ अहम और ज़रूरी काम हैं, जिनको पूरा करने के लिए बहुत ज़्यादा पैसे की ज़रूरत नहीं है। पाँच काम इस तरह हैंः—

1. मीडिया के प्रति जागरूकता *(Media Literacy):*

आज मीडिया सिर्फ ख़बरें नहीं देता, बल्कि जनमत बनाता है, सोच बनाता है और सामाजिक रुझानों पर असर डालता है। इसलिए मीडिया जागरूकता का मतलब सिर्फ सोशल मीडिया इस्तेमाल करना या खबरें पढ़ना नहीं है, बल्कि यह समझना है कि ख़बर किस तरह तैयार होती है, किस ज़रिये से पेश की जाती है, किन तथ्यों को उभारा और किनको नज़रअंदाज़ किया जाता है, और किस तरह एक खास नैरेटिव बनाया जाता है।

इस्लाम ने सदियों पहले तहकीक का जो सिद्धांत पेश किया था, वो आज की भाषा में *Fact Checking* और *Media Verification* कहलाता है। कुरआन ने कहा है कि अगर कोई झूठा व्यक्ति तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो उसकी जाँच कर लिया करो। इसी तरह रसूलुल्लाह सल्ल0 ने बड़ी साफ़ बात कही कि आदमी के झूठा होने के लिए यही काफी है कि वो सुनी—सुनाई बात को आगे फैला दे। ये शिक्षाएं इस हक़ीक़त को स्पष्ट करती हैं कि एक मुसलमान की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ ख़बर पाना नहीं बल्कि उसकी सच्चाई, उसके फायदे और उसके परिणामों की जाँच करना भी है। डिजिटल दौर में अफवाहें, झूठी खबरें और गुमराह करने वाली जानकारियां पलों में लाखों लोगों तक पहुँच जाती हैं। ऐसे दौर में मीडिया जागरूकता हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है ताकि वो फेक न्यूज, झूठे प्रोपेगेंडा और गुमराह करने वाले बयानों का शिकार होने के बजाय खोजी सोच के साथ हक़ीक़त का विश्लेषण करे। यही जागरूकता एक आम यूजर को एक ज़िम्मेदार और समझदार व्यक्ति में बदल देती है।

2. सकारात्मक और सक्रिय इस्तेमालः—

मीडिया को समझने के

बाद दूसरा मरहला उसका बेहतर और सकारात्मक उद्देश्यों के लिए सही इस्तेमाल है। इस्लाम में किसी भी साधन की कीमत उसके उद्देश्य और परिणाम से तय होती है। इसलिए मीडिया खुद अच्छा या बुरा नहीं है, उसका दर्जा उसके इस्तेमाल पर निर्भर है। अगर इसके जरिये झूठ, नफ़रत और अश्लीलता को फैलाया जाए तो यह समाज के लिए नुकसानदेह साबित होता है, लेकिन अगर इल्म, दावत, नैतिकता, इंसाफ़ और मानव सेवा के लिए इस्तेमाल किया जाए तो यह समाज सुधार का सबसे असरदार ज़रिया बन जाता है।

आज मीडिया सिर्फ मनोरंजन का ज़रिया नहीं बल्कि ज्ञान, शोध और दावत का भी सबसे बड़ा मैदान है। दुनिया के बड़े विश्वविद्यालय, शोध संस्थान, वैश्विक कॉन्फ्रेंस और आधुनिक विज्ञान कुछ क्लिक्स में हर छात्र की पहुँच में आ सकते हैं। अगर मुस्लिम नौजवान अपने समय का एक हिस्सा सोशल मीडिया की बेमकसद व्यस्तताओं के बजाय ज्ञान और वैचारिक विकास पर खर्च करें तो उनकी व्यक्तिगत और सामूहिक क्षमताओं में बड़ा इज़ाफ़ा हो सकता है।

इसी तरह मौजूदा दौर में इस्लाम की दावत, नैतिक सुधार और मानव सेवा के लिए भी मीडिया में असाधारण संभावनाएं हैं। छोटे वीडियो, लेख, पॉडकास्ट और दूसरे डिजिटल जरियों के जरिये शिक्षा, रोजगार, सामाजिक जागरूकता, धार्मिक सहिष्णुता और मानवीय मूल्यों को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दिया जा सकता है।

लेकिन ज़रूरी है कि यह सारी गतिविधियाँ सत्यता, ईमानदारी, इंसाफ, पारदर्शिता और ज़िम्मेदारी के सिद्धांतों के अनुसार होनी चाहिए। क्योंकि इस्लामी पत्रकारिता और जनसंचार की बुनियाद इन्हीं नैतिक मूल्यों पर क़ायम है।

यहाँ इस हक़ीक़त को भी नहीं भूलना चाहिए कि आज के दौर में सबसे बड़ी प्रतिस्पर्धा इंसान का ध्यान हासिल करने की है। हालांकि सनसनीखेज और भड़काऊ सामग्री कुछ समय के लिए प्रसिद्धि हासिल कर सकती है, लेकिन लंबे समय तक असर सिर्फ उसी सामग्री का होता है जो रिसर्च, नैतिकता और सकारात्मक उद्देश्यों पर आधारित हो, इसलिए मुसलमानों को वायरल होने के बजाय असरदार और रचनात्मक होने को प्राथमिकता देनी चाहिए।

इस तरह मीडिया के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी से इसका इस्तेमाल वो बुनियादी स्तंभ हैं जिन पर एक मजबूत, सम्मानजनक और असरदार मीडिया प्रभुत्व की नींव रखी जा सकती है। इसी के जरिए मुसलमान न सिर्फ खुद गुमराह करने वाली सूचनाओं से सुरक्षित रह सकते हैं बल्कि समाज में ज्ञान, संतुलन और भलाई को बढ़ाने में भी असरदार भूमिका निभा सकते हैं।

3. मीडिया में असरदार प्रतिनिधित्व और प्रभावः—

मीडिया के मैदान में सिर्फ उपभोक्ता *(Consumer)* बन कर रह जाना किसी भी समझदार समाज के लिए काफी नहीं है, बल्कि ज़रूरी है कि वह विश्लेषण और राय बनाने की प्रक्रिया में भी असरदार भूमिका निभाए। आज जो ताकतें मीडिया में असरदार प्रतिनिधित्व रखती हैं, वही जनमत, राष्ट्रीय बहस और नीति—निर्माण पर भी ज़्यादा असर डालती हैं। इसलिए भारतीय मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि वह मीडिया में अपनी सकारात्मक, संतुलित और सम्मानजनक उपस्थिति को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल करें। इस मकसद के लिए सिर्फ मीडिया की आलोचना काफी नहीं, बल्कि पत्रकारिता, जनसंचार, डॉक्यूमेंट्री, पॉडकास्ट, मीडिया रिसर्च, जर्नलिज्म, डेटा जर्नलिज्म और मीडिया मैनेजमेंट जैसे क्षेत्रों में युवाओं का पेशेवर प्रशिक्षण ज़रूरी है।

जब तक विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मीडिया

संस्थानों में योग्य, प्रतिभाशाली और चरित्रवान मुस्लिम पत्रकार, एंकर, विश्लेषक और मीडिया पॉलिसी मेकर्स की असरदार मौजूदगी नहीं होगी, तब तक मुस्लिम समाज का दृष्टिकोण वांछित तरीक़े से सामने नहीं आ सकेगा।

यह ज़रूरी कोशिश किसी खास वर्ग के बचाव के लिए नहीं, बल्कि सच्चाई, इंसाफ, संतुलन और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए होनी चाहिए। एक जिम्मेदार पत्रकार अपने धार्मिक या सामाजिक पहचान से पहले तथ्यों की ईमानदारी से व्याख्या करने का अमानतदार होता है। यही इस्लामी शिक्षाओं की मांग भी है और पत्रकारिता की बुनियादी नैतिकता भी।

4. वैकल्पिक मीडिया संस्थानों का निर्माणः—

आज के दौर में कोई भी कौम सिर्फ दूसरों के मीडिया पर निर्भर रह कर दुनिया में असरदार भूमिका नहीं निभा सकती। अपने विचारों, मूल्यों और मुद्दों को असरदार तरीक़े से पेश करने के लिए अपने खुद के मीडिया संस्थान, प्रशिक्षण केंद्र और संचार प्लेटफॉर्म भी बनाने होंगे। अच्छी बात यह है कि डिजिटल क्रांति ने इस काम को पहले के मुकाबले कहीं ज़्यादा आसान और कम ख़र्च वाला बना दिया है। आज एक मेयारी वेब पोर्टल, यूट्यूब चैनल, डिजिटल मैगजीन या रिसर्च प्लेटफॉर्म, सीमित संसाधनों के साथ भी शुरू किया जा सकता है, बशर्ते कि इसके पीछे स्पष्ट उद्देश्य, लगातार मेहनत और पेशेवर मानक मौजूद हों।

यह स्पष्ट रहे कि मीडिया संस्थान सिर्फ एक डिजिटल या वेबसाइट का नाम नहीं है, बल्कि यह एक संगठित व्यवस्था है जिसमें रिसर्च, संपादन, योजना, प्रशिक्षित मानव संसाधन, आर्थिक स्थिरता और लंबी अवधि की रणनीति बुनियादी तत्वों की हैसियत रखते हैं।

इस सिलसिले में सिर्फ बड़े प्रोजेक्ट्स का इंतजार करना भी ठीक नहीं। छोटे लेकिन लगातार उठाए गए क़दम ही बड़े संस्थानों की नींव बनते हैं। अगर अलग—अलग शहरों, कॉलेजों, जमातों और मदरसों में मीडिया साक्षरता केंद्र, ट्रेनिंग वर्कशॉप, कम्युनिटी मीडिया ग्रुप और युवा पत्रकारों के नेटवर्क बनाए जाएं तो ये भविष्य में एक संगठित मीडिया संस्थान का रूप ले सकते हैं।

किसी भी सकारात्मक आंदोलन की कामयाबी का राज यही है कि वह विचारधारा के साथ—साथ संस्थान भी बनाता है, क्योंकि व्यक्ति बदलते रहते हैं लेकिन संस्थान विचार और सेवा की मशाल को जलाए रखते हैं।

5. उच्च स्तरीय मीडिया सामग्री का निर्माणः—

मीडिया प्लेटफॉर्म की स्थापना के बाद सबसे जरूरी काम यह है कि इन प्लेटफार्म के ज़रिए उच्च स्तरीय सामग्री कैसे दी जाए। अगर सामग्री रिसर्च, ईमानदारी, गंभीरता, गहराई और उच्च पेशेवर मानकों से खाली हो तो आधुनिक से आधुनिक साधन भी उच्च और स्थायी असर पैदा नहीं कर सकते। इसके विपरीत, अगर एक रिसर्च पर आधारित वीडियो, एक विषय पर आधारित डॉक्यूमेंट्री और समझदारी पर आधारित सामग्री हो तो वह लाखों दिलो दिमाग को प्रभावित करने की क्षमता रखती है।

भारतीय मुसलमानों को इस समय ऐसी उच्च स्तरीय मीडिया सामग्री की ज़रूरत है जो सिर्फ प्रतिक्रिया *(Reaction)* तक सीमित न हो बल्कि सकारात्मक विमर्श *(Positive Narrative)* बनाए। ऐसी सामग्री जो इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं, मुसलमानों के ज्ञान और संस्कृति में उनकी सेवाओं, सामाजिक समस्याओं के व्यावहारिक समाधान, राष्ट्रीय एकता, संवैधानिक मूल्यों और मानवता के प्रति उनकी उदारता को तर्कपूर्ण, संतुलित और दिलचस्प अंदाज में पेश करे।

अस्थायी भावनाएँ, सनसनी

फैलाना और गैर– ज़िम्मेदाराना बातचीत कुछ पलों का ध्यान तो खींच सकती है, लेकिन कौमों का बौद्धिक निर्माण हमेशा गंभीर, शोधपूर्ण और गरिमामय संचार से ही होता है।

आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया ने हर व्यक्ति को पत्रकार बना दिया है। इसलिए हमारी प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि समुदाय का हर नौजवान मीडिया की बुनियादों से वाकिफ़ हो और अपनी क्षमता के अनुसार मीडिया का उपयोग करे। हमारे नौजवान ऐसा पत्रकारिता कंटेंट तैयार करें जो भरोसा पैदा करे, दिलों को जोड़े, गलतफहमियों को दूर करे और समाज में अच्छाई, न्याय और संतुलन को बढ़ावा देने का ज़रिया बने।

हमें यह सच्चाई मान लेनी चाहिए कि मीडिया के क्षेत्र में प्रभावी मौजूदगी किसी एक दिन, एक अभियान या एक संस्था से पैदा नहीं होती। इसके लिए निरंतर मेहनत, वैचारिक दूरदर्शिता, संस्था–निर्माण, प्रशिक्षित मानव संसाधन और दीर्घकालिक योजना की ज़रूरत होती है। जो कौमें आज वैश्विक मीडिया पर असर रखती हैं, उन्होंने यह मुकाम सालों की संगठित कोशिशों, निवेश और मानव संसाधनों की तैयारी के बाद हासिल किया है। हालांकि लंबी योजनाओं की ज़रूरत का मतलब यह नहीं है कि हम संसाधनों के पूरा होने या आदर्श हालात का इंतजार करते हुए हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें। हर बड़े आंदोलन की शुरुआत छोटे लेकिन निष्ठावान कदम से ही होती है।

आज ज़रूरत शिकायतों को बढ़ाने की नहीं, बल्कि क्षमताओं को बढ़ाने की है। दूसरों के नैरेटिव का सिर्फ जवाब देने की नहीं, बल्कि अपना सकारात्मक और रचनात्मक नैरेटिव पेश करने की है, सिर्फ मीडिया के उपभोक्ता बनने की नहीं, बल्कि इसके जिम्मेदार निर्माता बनने की है। अगर भारतीय मुसलमान मीडिया के प्रति जागरूकता, नैतिक संचार, पेशेवर कुशलता, संस्था–निर्माण और गुणवत्तापूर्ण कंटेंट के निर्माण को अपनी सामूहिक प्राथमिकताओं में शामिल कर लें तो न केवल अपना बेहतर प्रतिनिधित्व कर सकेंगे बल्कि देश और समाज के बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक निर्माण में भी प्रभावी भूमिका निभा सकेंगे।

खूब याद रखना चाहिए कि मंजिल हमेशा दूर नज़र आती है, मगर सफ़र की शुरुआत हमेशा पहला कदम उठाने से होती है। आज का एक छोटा, मगर संगठित और निष्ठा भरा व्यावहारिक कदम कल के एक मजबूत मीडिया आंदोलन की नींव बन सकता है। इसलिए हमें बड़े सपने ज़रूर देखने चाहिए, लेकिन उन सपनों को साकार करने की शुरुआत आज, इसी पल, व्यक्तिगत स्तर पर व्यावहारिक काम से होनी चाहिए। यही सफलता का रास्ता है और यही समय की सबसे बड़ी ज़रूरत भी है।

❖❖❖

शुद्धि पत्र

अगस्त 2026 के अंक में प्रकाशित संपादकीय "15 अगस्त एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण दिन" लेख में लेखक मुहम्मद गुफरान नदवी द्वारा पृष्ठ नम्बर 11 के अंतिम पैराग्राफ में अंकित अशआर "सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है ज़ोर कितना बाजुए कातिल में है।" को त्रुटिवश राम प्रसाद बिस्मिल द्वारा रचित लिख दिया गया था, जबकि उक्त ग़ज़ल के रचयिता बिस्मिल अजीमाबादी हैं। उक्त त्रुटि हेतु हमें खेद है।

इदारा

आप सल्ल0 के जीवन पर एक दृष्टि

मुहम्मद इक़बाल नदवी

खुदा तआला ने आप सल्ल0 के जीवन को समस्त लोगों के लिए एक अच्छा और आदर्श नमूना बताया है जिसमें समस्त मानव जाति के लिए सुख चैन और हर मंज़िल के लिए प्रकाश है जीवन के जिस विभाग में चाहोगे वहाँ आपको एक प्रगतिशील रहनुमाई प्राप्त होगी।

आप सल्ल0 का जन्म और वन्शः—

आप का जन्म अरब के मशहूर शहर मक्का में 570 ई0 में हुआ आप के पिता का नाम हज़रत अब्दुल्लाह था जो आप के जन्म से पहले ही इस संसार से जा चुके थे। आप की माता का नाम हज़रत आमिना था आप अरब के मशहूर क़बीला कुरैश के सम्मानित परिवार बनू हाशिम से थे आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आप का पालन पोषण किया उनके देहान्त के बाद आप सल्ल0 के चचा अबूतालिब ने आप की देख—भाल की जो आप से बहुत प्यार करते थे।

आप सल्ल0 का बचपनः—

अरब के रीति रिवाज के अनुसार आपको हज़रत हलीमा सादिया ने दूध पिलाया दो वर्ष तक दूध पिलाने के बाद आपकी माता से आज्ञा लेकर चार साल तक आप को अपने पास रखा आपके अन्दर सच्चाई अच्छे अख़लाक़ तथा बचपन से ही आदर्श संस्कार दिखाई देने लगे थे। आप ने बचपन में ही जीवन के उन ठोस और मज़बूत स्तम्भों को खो दिया था जिनकी आवश्यकता हर बालक को होती है इन सब के बावजूद खुदा तआला ने आप को कठिन परिस्थितियों के लिए तैयार किया क्योंकि आगे चलकर आपके कन्धों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी का बोझ डाला जाना था।

जवानी और सच्चाई :—

आप जब जवानी की उम्र को पहुँचे तो खूब मेहनत और परिश्रम किया, व्यापार किया, आपने अपने चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता सच्चाई और अमानतदारी का दामन कभी भी हाथ से नहीं छोड़ा इसीलिए मक्का के लोग आप को अल सादिक़ अर्थात सच्चा, और अल अमीन अर्थात अमानतदार कहते थे। पच्चीस वर्ष की आयु में आपने चालीस वर्ष की एक विधवा खातून हज़रत ख़दीजा से विवाह किया वह एक सम्मानित और प्रसिद्ध महिला थीं मानवीय जीवन के मूल्यों का उन्हें काफी अनुभव था हर कठिन समय में उन्होंने आप का साथ दिया। आपके हौसले और हिम्मत को कभी टूटने न दिया।

नुबुव्वत का पहला आसमानी संदेशः—

चालीस साल की उम्र में आप अधिकतर हिरा नाम की एक गुफा में जा कर इस क़ायनात के बनाने वाले की इबादत और उसकी भक्ति में लीन रहा करते थे। एक दिन हज़रत जिबरील आपके पास ख़ुदा तआला का संदेश लेकर प्रकट हुए और आपसे कहाः इकरा अर्थात पढ़िऐ आप सल्ल0 ने कहा मैं पढ़ने वाला नहीं हूं तीन बार आप को अपने सीने से लगाकर छोड़ा फिर कहा अब पढ़ो ''पढ़ो अपने उस रब के नाम से जिसने पैदा किया''। यहीं से आप पर आसमानी संदेश का आरम्भ हुआ और आप को नबी बनाया गया।

मक्का में इस्लाम की दावतः—

आपने सबसे पहले अपने करीबी और खानदान के लोगों को अल्लाह का पैग़ाम सुनाया सबसे पहले मुसलमान होने वालों में हज़रत खदीजा और हज़रत अबु बक्र, हज़रत अली, और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा थे। आपने

कुछ दिनों के बाद मक्का के समस्त लोगों को एक अल्लाह की इबादत सच्चाई, इंसाफ अच्छे आचरण और इंसानी बराबरी की तरफ़ बुलाया लेकिन मक्का के लोगों ने आपके इस संदेश का विरोध किया और आपके शत्रु बन गये अपको तथा आप पर ईमान लाने वाले मुसलमानों को बहुत सताया, सामाजिक बहिष्कार किया, और अनेक प्रकार से प्रताड़ित किया मगर मुसलमान संयम और हिम्मत के साथ सब कुछ बर्दाश्त कर लेते और जो आप के साथ हो जाता वह फिर कभी साथ न छोड़ता।

आमुल हुज़्न अर्थात गमों का सालः—

आपके चचा अबू तालिब और आपकी पत्नी हज़रत ख़दीजा इस दुनिया से चल बसे यह वर्ष आपके लिए दुखों का साल था इसलिए इसका नाम आमुल हुज़्न पड़ा।

तायफ़ का सफर और मेराज का वाक़ियाः—

मक्का के बाहर एक दूसरा शहर तायफ़ जहाँ आप के कुछ रिश्तेदार भी रहते थे वहाँ गये और लोगों को अल्लाह का संदेश सुनाया वहाँ के चौधरी और सरदारों ने आप की बात को स्वीकार नहीं किया उलटा आप पर पत्थरों को फेंक कर लहूलूहान कर दिया जरा विचार कीजिये एक आदर्श और महान व्यक्ति पर केवल इसलिए पत्थर चलाए जा रहे थे कि वह लोगों की भलाई के लिए उन्हें अल्लाह का संदेश पहुंचा रहा था फिर भी आपने उनकी तबाही के लिए एक शब्द भी मुँह से नहीं निकाला केवल अपने परवरदिगार को याद किया। ख़ुदा तआला ने आपकी तसल्ली और दिलजोई के लिए एक महान यात्रा कराई जिसे मेराज कहा जाता है इस अवसर पर आपको अनेकों प्रकार की बड़ी बड़ी निशानियां दिखाई गईं और पाँच वक़्त की नमाज़ फर्ज की गई।

हिजरतः—

जब मक्का में मुसलमानों पर अत्याचार बहुत अधिक हो गया तो आप सल्ल0 ने अल्लाह के हुक्म से मदीना मुनव्वरा की ओर हिज़रत की, कुछ मुसलमान उससे पहले मदीना पहँच चुके थे मदीना के बहुत से लोग पहले ही मुसलमान हो गये थे। आप ने मदीना पहुँच कर सबसे पहले एक मस्जिद बनाई और मदीना के अन्दर एक ऐसे समाज की स्थापना की जिसमें इंसाफ भाईचारा अमन शांति और मानव सम्मान को महत्व दिया गया साथ ही साथ मदीना को शिक्षा और सामाजिक मार्गदर्शन का केन्द्र बनाया।

एक महान और आदर्श शासकः—

मदीना मुनव्वरा में आप एक नबी और धर्म गुरु होने के साथ साथ एक न्यायधीश और एक कुशल शासक भी थे आप का न्याय सब के लिए समान था आप ने समाज से गरीबों अनाथ बच्चों महिलाओं पड़ोसियों और कमज़ोर लोगों के अधिकारों पर बहुत अधिक ज़ोर दिया क्योंकि उस समय मानव अधिकारों का हनन एक आम बात समझी जाती थी आपने उसको ख़त्म करके सब के अधिकारों की रक्षा के प्रति समस्त लोगों को मानवीय पाठ पढ़या।

युद्ध और शांति!ः—

मदीना के दौर में मुसलमानों को अनेकों युद्धों का सामना करना पड़ा उनमें प्रमुख युद्ध रमजान दो हिजरी में बद्र का युद्ध हुआ फिर तीन हिजरी में उहुद का युद्ध हुआ उसके बाद पाँच हिजरी में पूरा अरब देश एक होकर मदीना पर हमला करना चाह रहा था किन्तु आपने मदीना के सामने एक चौड़ी और गहरी ख़न्दक़ खुदवा दी थी जिसको दुश्मन पार नहीं कर सके इस लिए इसको खन्दक का युद्ध कहते हैं। इन युद्धों में आपने नैतिक सीमाओं को पार न करने की

शेष पृष्ठ........39......पर

महिलाओं का सम्मान

अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

इस्लाम में नारी का, सम्मान बहुत है।
घर की है राजरानी, सम्मान बहुत है।।
करले खुदा को राज़ी, शौहर भी रहे राज़ी।
जन्नत में उस नारी का, सम्मान बहुत है।।
बाप की जागीर में, बेटी को हक़ दिलाया।
इस्लाम में बेटी का, सम्मान बहुत है।।
पति की सम्पदा में, पत्नी का भी हिस्सा है।
इस्लाम में पत्नी का, सम्मान बहुत है।।
माता की करो सेवा, जन्नत ही मिलेगी।
इस्लाम में माता का, सम्मान बहुत है।।
औरत रहे पर्दे में, कुरआन का फरमान।
पर्दा प्रथा में नारी का, सम्मान बहुत है।।
अबला को जो सताये, सुन लो मेरे भाई।
अल्लाह के यहाँ उस का, अपमान बहुत है।।
नारी को क़त्ल करना, नारी को सती करना।
मालिक के यहाँ उस का, अपमान बहुत है।।
इस्लाम के पैग़ाम को, फैलाओ मेरे भाई।
सिद्दीक़ी कह रहा है, सम्मान बहुत है।।

❖❖❖

इस्लाम में महिलाओं के हुकूक और वक़ार की बहाली

नौशाद खान नदवी

इतिहास के पन्नों पर जब हम इस्लाम से पूर्व विभिन्न सभ्यताओं का अध्ययन करते हैं, तो नारी का वजूद एक अत्यंत पीड़ा दायक और दयनीय स्थिति में दिखाई देता है। प्रसिद्ध विद्वान आचार्य अब्बास महमूद अल–अक्काद अपनी उत्कृष्ट कृति "अल–मअतु फिल कुरआन" में लिखते हैं कि इस्लाम के आगमन से पूर्व दुनिया की किसी भी बड़ी सभ्यता में नारी को एक स्वतंत्र और सम्मानीय मानव का दर्जा प्राप्त नहीं था। प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को स्वतंत्र अधिकार प्राप्त नहीं थे। पति की मृत्यु के पश्चात् नारी के सामने या तो सती होकर अपने प्राण त्याग देने का कठोर मार्ग था, अथवा पति के परिवार से जुड़े लोगों के साथ एक दासी का जीवन व्यतीत करने की विवशता थी।

हमोराबी की शरिया में औरतों को कोई इंसानी दर्जा नहीं दिया गया था, बल्कि उन्हें महज घरेलू पालतू जानवरों के समान समझा जाता था।

यूनानी सभ्यता में नारी हर प्रकार के मानवीय अधिकारों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता से पूर्णतः वंचित थी। महिलाओं को ऐसे अलग–थलग मकानों में बंद रखा जाता था जो मुख्य रास्तों से दूर, कम खिड़कियों वाले होते थे और जिनके दरवाज़ों पर सख़्त पहरेदारी होती थी। यहाँ तक कि महान दार्शनिक अरस्तू ने स्पार्टा के लोगों पर केवल इसलिए आपत्ति जताई थी कि वे अपने परिवार की औरतों के साथ नरमी का व्यवहार करते हैं तथा उन्हें विरासत, तलाक और आजादी के अधिकार देते हैं। अरस्तू का मानना था कि इन अधिकारों के कारण उनमें घमंड उत्पन्न हो गया है, और वह स्पार्टा के पतन का मुख्य कारण महिलाओं को दी गई इसी अत्यधिक आज़ादी को मानता था।

लगभग यही स्थिति रोम साम्राज्य में भी बनी हुई थी। इस्लाम से पूर्व मिस्र की प्राचीन सभ्यता और उसके कानून समाप्त हो चुके थे। मध्य पूर्व में रोमन सभ्यता के पतन और उसकी विलासिता की प्रतिक्रिया स्वरूप एक ऐसी विचारधारा ने जन्म लिया जो संसार, शारीरिक जीवन और विशेषकर नारी को अपवित्र मानती थी। औरत को ही समस्त गुनाहों और बुराईयों का मूल ज़िम्मेदार ठहराया जाता था। यहाँ तक कि मध्य युग के यूरोपीय समाजों में इस विषय पर गंभीर बहसें होती थीं कि क्या औरत के भीतर कोई आत्मा पाई भी जाती है या नहीं।

यहूदी व्यवस्था के अंतर्गत भी महिलाओं को विरासत और सम्पत्ति में किसी भी प्रकार का अधिकार न देने का नियम लागू था। यह सोचना भूल होगी कि अरब के रेगिस्तान में नारी के साथ कोई अलग या दयालुता का व्यवहार होता था। अरब के कुछ भागों में नारी के साथ दुनिया के अन्य देशों से भी अधिक क्रूरता की जाती थी। महिला स्वयं माल और मवेशियों की तरह विरासत में एक वारिस से दूसरे वारिस को स्थानांतरित *(transfer)* कर दी जाती थी। समाज में बेटी का जन्म एक कलंक समझा जाता था और लोग आत्म–सम्मान तथा झूठी शान के मारे अपनी नन्हीं बेटियों को बचपन में ही जिंदा मिट्टी में दफना देते थे।

बौद्ध साहित्य के हवाले से भी नारी के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण देखने को मिलता है। ''इंसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एंड एथिक्स'' (वॉल्यूम 1) पेज 271) में बौद्ध विचारक

''चुल्लवग्ग'' का कथन प्रस्तुत किया गया है (जिसे ओल्डेनबर्ग ने 1906 में प्रकाशित अपनी पुस्तक ''बुद्ध'' के पृष्ठ 169 पर उद्धृत किया है) ''पानी के अंदर तैरती मछली की समझ में न आने वाली चालों की तरह नारी का स्वभाव भी अत्यंत जटिल है'' उसके पास चोरों की भाँति अनेक हथकंडे हैं और सत्य उसके पास से होकर भी नहीं गुजरता।''

इस्लाम में औरत का मकामः–

इस्लाम में नारी को जो गरिमा, अधिकार और सम्मान प्रदान किया गया है, उसकी मिसाल इतिहास में कहीं नहीं मिलती। कुरआन मजीद ने न केवल महिलाओं के अधिकारों को रेखांकित किया, बल्कि उनके नाम से एक पूरी स्वतंत्र सूरत **''सूरह अन–निसा''** (महिलाओं वाली सूरत) नाज़िल फरमाई। कुरआन की शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जहाँ–जहाँ पुरुषों को संबोधित किया गया है, प्रायः वहीं महिलाओं का उल्लेख भी बराबरी के साथ किया गया है।

कुरआन के वे अंश जो विशेष रूप से नारी के संबंध में अवतरित हुए हैं, उसके भीतर एक अद्‌भुत आत्मविश्वास उत्पन्न करते हैं। ये संदेश स्पष्ट करते हैं कि महिला समाज निर्माण, धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति, इस्लाम की सेवा और भलाई के कार्यों में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर पूरी तरह हिस्सा ले सकती है।

कुरआनी आयतों के माध्यम से समानता का संदेशः–

o **सूरह अन्निसा (आयत 124) में अल्लह का इरशाद है::–** ''और जो कोई नेक अमल (अच्छे कर्म) करेगा चाहे वह पुरुष हो या स्त्री और वह ईमान वाला होगा, तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे और उनके साथ तिल बराबर भी जुल्म नहीं किया जाएगा।''

o **सूरह आले–इमरान (आयत 195)**:– ''उनके रब ने उनकी दुआ स्वीकार की कि मैं तुममें से किसी अमल करने वाले के अमल को जाया (नष्ट) नहीं करूँगा, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री तुम सब आपस में एक ही तो हो।''

o **सूरह अल–अहजाब (आयत 35)**:– इस आयत में अल्लाह ताआला ने मुस्लिम पुरुषों और मुस्लिम स्त्रियों, ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली स्त्रियों, आज्ञाकारी पुरुषों और आज्ञाकारी स्त्रियों, सत्यवादी पुरुषों और सत्यवादी स्त्रियों, और धैर्य रखने वाले पुरुषों व स्त्रियों का अलग–अलग उल्लेख करके दोनों के निष्ठावान कर्मों और उनके सम्मान को एक समान दर्जा दिया है।

o **सूरह अल–हुजुरात (आयत 13)**:– कुरआन मानवता के सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य और सम्मान का आधार लिंग, नस्ल, रंग या रक्त–भेद को नहीं, बल्कि केवल ''तकवा' (ईश्वर–भीति/नैतिकता) को ठहराता है– ''ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें जातियों और कबीलों में बाँट दिया ताकि तुम एक–दूसरे को पहचान सको। अल्लाह के नज़दीक तुममें सबसे अधिक सम्मानित वही है जो तुममें सबसे ज़्यादा परहेजगार (अल्लाह से डरने वाला) है।''

इस्लाम द्वारा प्रदत्त व्यावहारिक एवं वैधानिक अधिकारः–

इस्लाम ने मुस्लिम महिला को जो क़ानूनी और सामाजिक अधिकार दिए हैं, उनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं–

1. **स्वामित्व और विरासत का अधिकार (Ownership & Inheritance):** महिला को अपनी संपत्ति रखने, व्यापार करने और अपने पिता, पति व बच्चों की जायदाद में स्थायी अधिकार प्राप्त है।

2. **क्रय–विक्रय का अधिकार (Financial Rights):-** वह बिना किसी पुरुष की मध्यस्थता के अपनी संपत्ति खरीदने, बेचने

या अनुबंध करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है।

3. पति से अलग होने (खुलअ) का अधिकारः– यदि किसी अपरिहार्य स्थिति में वैवाहिक जीवन निभाना संभव न हो, तो महिला को न्यायसंगत तरीके से अलग होने (खुलअ लेने) का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।

निश्पक्ष एवं पश्चिमी विद्वानों की दृष्टि में इस्लामी क्रांतिः–

इस्लाम द्वारा नारी को दिए गये अधिकारों का लोहा आधुनिक कानूनविदों और वैश्विक विद्वानों ने भी माना हैः **एन0 एल0 कुल्सेन** *(N-L- Coulson)* अपनी पुस्तक *"A History of Islamic Law" (Edinburgh) 1971, P- 14)* में लिखते हैंः "निस्संदेह, महिलाओं की हैसियत के मामले में– विशेषकर विवाहित औरतों के मामले में– कुरआन के कानून उच्च स्थान रखते हैं। निकाह और तलाक के नियम बड़ी संख्या में हैं, जिनका मूल उद्देश्य औरतों की सामाजिक स्थिति में सुधार लाना है। ये नियम अरबों के पारंपरिक कानूनों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन के द्योतक हैं। कुरआन ने महिला को एक ऐसा वैधानिक व्यक्तित्व *(Legal Personality)* प्रदान किया जो उसे पहले से प्राप्त नहीं था। इसमें सबसे बड़ी बात तलाक के नियमों में ''इद्दत'' की अवधि को शामिल करके महिला के संरक्षण को सुनिश्चित करना है।"

इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलिजन एवं एथिक्स में लिखा है किः–

पैगम्बर–ए–इस्लाम ने निश्चित ही औरतों का दर्जा उससे कहीं अधिक ऊपर उठाया जो उन्हें प्राचीन अरब में प्राप्त था। औरत अब संपत्ति नहीं रही, बल्कि स्वयं संपत्ति में हिस्सा पाने की हकदार बन गई। उसे दोबारा शादी पर मजबूर नहीं किया जा सकता था, औरतें अपने घरों की मालकिन बनीं और माँ की इज़्ज़त की जाने लगी''।

❖❖❖

पृष्ठ......35.... का शेष

शिक्षा दी, बच्चों, महिलाओं और बूढ़ों पर जो अपने घरों में हैं वह लड़ने के लिए नहीं आये उन पर या जो अपनी इबादत गाहों में हैं उन पर हमला करने से सख़्ती से मना किया इसी प्रकार युद्ध के नियमों को तोड़ कर धोके से या अत्याचार करने से भी रोका फिर इस प्रकार सन 6 हिजरी में हुदैबिया की जंग हुई जिसको सुलह हुदैविया के नाम से जाना जाता है, इसके दो साल बाद जब मुशरिक़ों ने इस सुलह को तोड़ दिया तो फिर आप ने मुसलमानों को मक्का की ओर बढ़ने का आदेश दिया जब मक्का विजय हो गया तो आप के सामने वही लोग थे जिन्होंने आप को और आपके साथियों को वर्षों तक सताया और अत्याचार किया था।

मक्का के लोगों के साथ आपका व्यहारः–

जब आप मक्का में दाख़िल हुए तो वहाँ के लोग डर गये कि आज मुहम्मद अपने साथियों के साथ मिलकर हम सबको ख़त्म कर देंगे परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ आप ने समस्त मक्का वासियों को क्षमा कर दिया इसका मक्का के लोगों पर बहुत असर हुआ और एक बड़ी संख्या आपका यह व्यवहार देख कर मुसलमान हो गयी।

मानवीय अधिकारों के चयन और उनकी रक्षा के प्रति आखिरी पैग़ामः–

ग्यारह हिजरी में आपने आखिरी हज किया जहाँ आपने एक ऐसा भाषण दिया, जो समस्त मानवजाति के लिए संगे मील की हैसियत रखता है जिसको खुत्ब–ए–हज्जतुल वदाअ़ के नामे से जाना जाता है। इसके बाद 632 ई0 63 वर्ष की आयु में आप अपने परवरदिगार से जा मिले और रहती दुनिया तक के लिए एक ऐसा मार्ग दिया जिसको इस्लाम कहते हैं जो ऐसा मार्ग है जिसका उदाहरण इतिहास के पन्नों में नहीं मिलता।

❖❖❖

मानसून में सेहत का अलर्ट

डॉ0 शाहीन

बारिश के मौसम में खाने पीने में सावधानी रखने की काफी ज़रूरत होती है। बारिश में इंफेक्शन के साथ ही मच्छरों से फैलने वाली बीमारियों के लिए अनुकूल वातावरण होता है। इस मौसम में शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। इसकी वजह से लोग बिना भीगे ही बीमार पड़ जाते हैं। इसलिए इस मौसम में खान पान में विशेष ध्यान देने की ज़रूरत होती है।

तला हुआ खाना:-

बारिश के मौसम में पकौड़े कचौड़ी खाने का मन करता है। पर ज्यादा नमी वाला मौसम पाचन तंत्र को धीमा कर देता है। इस मौसम में चाट और पकौड़े से गैस संबधी परेशानी, एसिडिटी आदि से पेट खराब हो जाता है। दूषित खाना—पानी जनित बीमारियां जैसे कि पीलिया, हैजा, और दस्त आदि भी हो सकते है।

खुले पड़े फल और जूस पीने से बचें:-

सड़क किनारे मिलने वाले फल लंबे समय तक रखे रहते हैं। ऐसे में उन पर कीटाणु चिपक जाते हैं जो स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकते हैं। वहीं बाहर मिलने वाले फलों के रस से भी नुकसान हो सकता है।

नॉनवेज फूड से बनाऐं दूरी:-

बारिश के मौसम में हमारी पाचन क्रिया काफी कमज़ोर हो जाती है इसलिए ज़्यादा भारी भोजन पचने में मुश्किल होती है। इस मौसम में नॉनवेज खाने से बचें ज़्यादा चर्बी वाला या रेड मीट खाने से भी बचना चाहिए।

हरी पत्तेदार सब्जियां न खाएं:-

हरी पत्तेदार सब्जियों को बहुत पौष्टिक और सेहत के लिए लाभकारी माना जाता है। लेकिन इस मौसम में पत्तेदार सब्जियों का सेवन करने से बचना चाहिए। इस मौसम का तापमान और आर्द्रता हरी पत्तेदार सब्जियों पर बैक्टीरिया और फंगस के विकास के लिए अनुकूल होती है। इस वजह से संक्रमण का खतरा रहता है। पालक, मेथी के पत्ते, पत्ता गोभी, फूलगोभी, जैसी सब्जियों से इस मौसम में परहेज करें।

(डायटिशन, बलरामपुर अस्पताल)

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

जम्मू कश्मीर पूरी तरह साक्षर घोषितः—

जम्मू—कश्मीर केंद्र सरकार की उल्लास योजना के तहत पूरी तरह साक्षर राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की श्रेणी में शामिल हो गया है। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा कि 99.09% सफलता दर के साथ जम्मू—कश्मीर यह उपलब्धि हासिल करने वाला देश का सबसे अधिक आबादी वाला क्षेत्र बन गया है।

लंदन के मेयर सादिक खान को आजीवन लॉर्ड बनाने का ऐलानः—

ब्रिटेन के वजीर—ए—आजम सर कीर स्टार्मर ने हाउस ऑफ लॉर्ड्स के नये सदस्यों के नामों का ऐलान कर दिया है, जिनमें लंदन के तीन मर्तबा निर्वाचित होने वाले मेयर सादिक ख़ान का नाम भी शामिल है।

ब्रिटेन हुकूमत की जानिब से जारी बयान के मुताबिक वजीर— ए—आजम की सिफारिश पर शाह चार्ल्स सोम ने नये मनोनीत सदस्यों को आजीवन लॉर्ड बनने की मंजूरी देने पर आमादगी ज़ाहिर की है। इस फैसले के बाद सादिक ख़ान ब्रिटेन के उच्च सदन ''हाउस ऑफ लॉर्ड्स'' के रुक्न बन जाएंगे, जहाँ उन्हें कानून साजी, कौमी पॉलिसियों और अहम अवामी मामलात पर बहस में हिस्सा लेने का इख्तियार हासिल होगा।

सादिक खान मुसलसल तीन मर्तबा लंदन के मेयर मुन्तखब होने वाले नुमायाँ सियासत दान हैं। वो बरतानवी सियासत में पाकिस्तानी नजाद मुस्लिम रहनुमा के तौर पर एक अहम मकाम रखते हैं और इससे पहले उन्हें नाइटहुड के ऐजाज से भी नवाजा जा चुका है। डाउनिंग स्ट्रीट के मुताबिक नई नामजदगियों का मकसद मुख्तलिफ शोबों में नुमायाँ खिदमात अंजाम देने वाली शख्सियात को कौमी सतह पर ऐजाज देना है।

हाउस ऑफ लॉर्ड्स इस वक्त तकरीबन 800 अरकान पर मुश्तमिल है और इसे दुनिया के बड़े कानून साज ऐवानों में शुमार किया जाता है। ऐवान—ए—बाला बरतानवी पार्लियामेंट का अहम हिस्सा है, जहाँ कानून साजी का जायजा लिया जाता है और मुख्तलिफ कौमी मामलात पर बहस की जाती है।

सियासी मुबस्सिरीन के मुताबिक सादिक खान की लॉर्डशिप न सिर्फ उन के सियासी करियर में एक अहम मील का पत्थर है बल्कि बरतानिया में पाकिस्तानी नजाद कम्युनिटी के लिए भी एक नुमायाँ ऐज़ाज़ तसव्वुर की जा रही है।

''गज़ा नस्ल कुशी''

हिन्दुस्तान ने इस्राइल को असलहे की 2596 खेपें भेजीं:— एमनेस्टी इंटरनेशनल का इल्ज़ामः—

एमनेस्टी इंटरनेशनल ने हिंदुस्तान पर इल्ज़ाम लगाया है कि उसने गजा में जारी नस्लकुशी में इस्राइल को असलहे की सप्लाई जारी रखी। इदारे ने 7 अक्टूबर 2023 से 30 नवंबर 2024 के दरमियान हिंदुस्तान से इस्राइल को एक्सपोर्ट की जाने वाली छोटे हथियारों, गोला— बारूद और फौजी गाड़ियों पर मुश्तमिल कम से कम 2596 खेपों को रिकॉर्ड किया है। एक रिपोर्ट में ये खुलासे प्रकाशित हुए हैं।

एमनेस्टी के तहकीक़ात माहिरीन ने तय किया कि हिंदुस्तानी कंपनियों ने इस्राइल को मिलिट्री ग्रेड के हथियारों के लिए छोटे हथियारों के कम से कम 3 लाख 90 हजार 516 पुर्जे, ड्रोन के वारहेड्स और आर्टिलरी शेल केसिंग समेत धमाकाखेज मवाद के 5 लाख 64 हजार 970 पुर्जे और फौजी गाड़ियों के 298 जुज (पार्ट्स) उन बड़ी इस्राइली कंपनियों को फराहम किए जो इस्राइली मुसल्लह अफवाज की बराह—ए—रास्त सप्लायर हैं।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांकः 22/08/2026 तारीख ________

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT	ATIYA	BUILDING
NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं 08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961 के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 25 - Issue 07

Whatsapp & Call 9559844716
Office Timing : 08:00 AM To 1:00PM
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3

DESIGNED BY : SAAD HAMDAM #9860448783